Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

9.3

चोटी क्यों रखें

(१६०)

ओमानन्द सरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

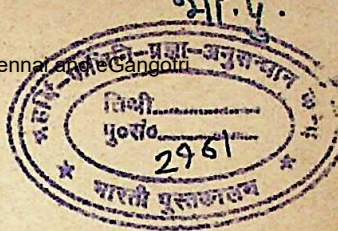
प्रकाशक—
हरयाणा साहित्य संस्थान
गुरुकुल झज्जर (रोहतक)
दूरभाष ४४

मूल्य ५०
प्रथम संस्करण
श्रावणी २०२९ वि०

मुद्रक :—
वेदव्रत शास्त्री विद्याभास्कर
आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ,
गोहाना रोड, रोहतक
दूरभाष : ५७४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



दो शब्द

आधुनिक शिक्षा दीक्षा के कारण नास्तिकता बढ़ती जा रही है और अपने पूर्वजों की पवित्र संस्कृति और धर्म के प्रति श्रद्धा और आस्था भी दिन प्रतिदिन घटती जा रही है। हमारी संस्कृति के प्रतीक चोटी जनेऊ और मेखला (तगड़ी) आदि को शिक्षित समाज पुरानी रूढ़ि और पाखण्ड समझ कर तिलाञ्जलि देता जा रहा है। उसको इनकी महत्ता समझाने के लिये न कोई उपदेश देता है न कोई इस विषय की पुस्तक उनको पढ़ने को ही मिलती है। दोष इनका भी कैसे बतायें। सर्वत्र अविद्या अन्धकार का साम्राज्य पुनः बढ़ता हुआ दिखाई पड़ रहा है। शिखा मेखला यज्ञोपवीत की अच्छी पुस्तकें भी कई वर्ष से दिखाई नहीं पड़तीं। अतः विवश हो पहले मेखला पर एक पुस्तिका लिखी, अब शिखा वा चोटी पर कुछ लिखने का प्रयत्न किया है। जो पुस्तकें इस विषय पर मुझे मिलीं उन्हें सबको कई बार पढ़ा तथा उनसे पूर्ण लाभ उठाकर "हम चोटी क्यों रखें" पुस्तक में अपनी बुद्धि के अनुसार कुछ लिखने का प्रयास किया। यदि कुछ भी युवक इसे पढ़कर चोटी रखना आरम्भ कर देंगे तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा।

ओमानन्द सरस्वती

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

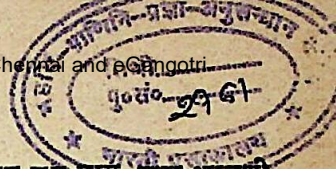
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखा वा चोटी

मन्द मन्द शीतल पवन चल रहा है। आकाश मेघों से घिरा हुआ है। कभी कभी सूर्य भगवान् भी मेघों के इतस्ततः होने पर दर्शन देकर अपनी पवित्र ज्योति से प्रकाश फैलाकर अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते रहते हैं। वर्षा की सुहावनी ऋतु है। सारा जंगल हरा भरा हो गया है। हरी हरी घास ने भी अपने मखमली गद्दे बिछा रखे हैं। उद्यान भी फलों फूलों से परिपूरित हैं। कोयल भी मन्द स्वर से सुरीले गाने गाकर आने जाने वालों का ध्यान अपनी ओर खेंच लेती है। मत्त मयूर भी अपनी प्रिय कूक और नृत्य से वर्षा का आनन्द लेरहे हैं। सर्वत्र सभी प्राणी सुखी दिखायी देते हैं। आर्यों का पवित्र पर्व श्रावणी वर्षा की शोभा को द्विगुणित कर रहा है। प्रत्येक घर से हवन का सुगन्धित धूवां निकल रहा है। वेद मन्त्रों की मधुर ध्वनि ने सोने पर सुहागे का कार्य किया है। सभी घरों में सत्संग हो रहे हैं। मन्दिरों आश्रमों और गुरुकुलों में तो आज धार्मिक मेले लगे हुये हैं। दूर दूर से लोग वेदकथा सुनने के लिये बड़े उत्साह से इन स्थानों की ओर भागे जा रहे हैं। हम भी ऐसे अवसर पर अपने अपने साथियों के साथ वेदामृत का पान करने के लिये एक आदर्श गुरुकुल में पहुंच गये। गुरुकुल का स्थान बड़ा रम्य और सुन्दर है। वहां के आचार्य, उपाध्याय, गुरुजन तथा ब्रह्मचारी सभी हृष्ट पुष्ट और प्रसन्नवदन दिखाई देते हैं। उनके शरीर स्वस्थ सुन्दर, सुदृढ़ और सुगठित हैं। यह सरल जीवन और उच्च विचारों की धरती है। आर्यों की इस कुल-भूमि में वेद वेदाङ्गों का अध्ययन होता है। श्रावणी के दिन कुछ आधुनिक ढंग की पाश्चात्य शिक्षा से शिक्षित दीक्षित विद्यार्थी और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



अध्यापक भी सत्संग में बैठे हुये हैं। हवन यज्ञ यागा तथा श्रावणी उपाक्रम के पश्चात् गुरुकुल के प्रमुख आचार्य का वेद प्रवचन हुआ। सभी श्रोता वेदामृत का पान कर आनन्दित हो उठे, और प्रत्येक के मुख से आचार्यप्रवर की प्रशंसा के शब्द सुनायी देने लगे।

आचार्य जी ने सभी श्रोताओं को शंका समाधान तथा संशय निवारणार्थ अवसर दिया। बाहर से आये स्कूल कालिज के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों ने अनेक शंकायें कीं, किन्तु उनकी शंका का मुख्य विषय चोटी और जनेऊ था। एक अध्यापक कृष्णकुमार थे, वे अपने विद्यार्थियों सहित पधारे थे। उन्होंने तथा उनके विद्यार्थियों ने बहुत शंकायें कीं। उनके यथोचित उत्तर दिये गये।

कृष्णकुमार—हम गुरुकुल के प्रायः सभी अध्यापकों और विद्यार्थियों के शिरों पर मोटी मोटी चोटियां तथा गले में जनेऊ देखते हैं। इस विज्ञान के युग में इन पुरानी धार्मिक रूढियों में फंसे रहना कुछ शोभा नहीं देता। जमाने के साथ गुरुकुल वालों को भी बदलना चाहिये। समय के साथ पग मिलाकर चलने में ही चतुराई और शोभा है।

इस प्रकार शंका करने पर गुरुकुल के आचार्य सभी शंकाओं का समाधान करते हैं।

आचार्य—ये मोटी मोटी चोटियां और जनेऊ दोनों ही पूर्ण रूप से वैज्ञानिक हैं। यह पुरानी रूढ़ि नहीं किन्तु हमारे कल्याण की वैज्ञानिक सीढी है। हम इसके सहारे से, अपना लोक और परलोक दोनों ही बना सकते हैं। गुरुकुल वालों को नहीं स्कूल कालिज वालों को बदलना चाहिये, क्योंकि गुरुकुल वालों का खान पान रहन सहन वेश-भूषा और भाषा सभी वैज्ञानिक हैं। किन्तु हमारे स्कूल कालिज के भाई योरुप के लोगों का अन्धानुकरण

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते हैं। महर्षि दयानन्द जी लिखते हैं "अनुकरण करना किसी बुद्धिमान् का काम नहीं"।

कृष्णकुमार—आप इसे खोलकर विस्तार से प्रमाण सहित बतलाने की कृपा करें।

आचार्य—वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, और आर्य (हिन्दू) जाति का सर्वस्व वेद है। "धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः" जो धर्म (कर्तव्य) को जानना चाहे उसके लिये परम प्रमाण श्रुति (वेद) ही है। संस्कृत में चोटी को शिखा कहते हैं।

वेद भगवान् शिखा (चोटी) के विषय में इस प्रकार लिखते हैं—

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम।
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोम त्विषिरिन्द्रियाणि॥

यजुर्वेद अ० १९ मन्त्र० ९२

इस युग के वेदों के प्रकाण्ड पण्डित महर्षि देव दयानन्द इस प्रकार अर्थ करते हैं।

महर्षि दयानन्द—हे मनुष्यो! जिसके (आत्मन्) आत्मा में (उपस्थे) समीप स्थिति होने में (वृकस्य) भेडिये के (लोम) बालों के (न) समान (व्याघ्रलोम) बाघ के बालों के (न) समान (मुख) मुख पर (श्मश्रूणि) दाढ़ी और मूंछ (शीर्षन्) सिर में (केशाः) बालों के (न) समान (शिखा) शिखा चोटी (सिंहस्य) सिंह के (लोम) बालों के समान (त्विषिः) कान्ति (शोभा) और (श्रियै) लक्ष्मी के लिये प्राप्त होने को समर्थ होता है।

भावार्थ—जिस प्रकार भेडिये, व्याघ्र और सिंह के बाल, दाढी और मूच्छें उनकी शोभा कान्ति आदि गुणों को बढ़ाने वाले हैं। उसी प्रकार मनुष्य के शिर पर उसकी शिखा वा चोटी कान्ति तेज वा शोभा और लक्ष्मी ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली है। सिंह व्याघ्र

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

2961

आदि का रोब दबदबा, तेज कान्ति उसके लम्बे केशों, जो दाढी मूंछ और शिखा के रूप में है, से ही है। इसी प्रकार मनुष्य को शोभा और कान्ति भी शिखा द्वारा प्राप्त होती है।

उव्वट तथा महीधर दोनों ने अपने वेद भाष्य में माना है कि चोटी को रखने से यश और शोभा की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र से स्पष्ट सिद्ध होता है कि बुद्धि और यश के लिये शिखा रखनी चाहिये। अथर्ववेद (८।२२।१५) में "शिखिभ्यः स्वाहा" शिखा चोटी रखने वालों का कल्याण हो। पं० क्षेमकरण वेदभाष्यकार ने लिखा है, चोटी रखने वालों की वाणी सुन्दर हो।

कृष्णकुमार—वेद के अनुसार चोटी रखने से कान्ति, लक्ष्मी, और सुन्दर वाणी प्राप्त होती है। क्या इसके अतिरिक्त कोई और भी शारीरिक और बौद्धिक लाभ भी चोटी रखने से होता है। क्या इस में आयुर्वेद शास्त्र का भी कोई प्रमाण है?

आचार्य—इस विषय में पं० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री जो आयुर्वेद शास्त्र के बहुत बड़े विद्वान् और सफल वैद्य हैं, वे अपनी "चोटी का महत्व" पुस्तक में सप्रमाण लिखते हैं। आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति सबसे प्राचीन और पूर्ण रूपेण वैज्ञानिक है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में लिखा है, सबसे अधिक रक्षा मर्म स्थानों की करनी चाहिये। "मर्माणि जीवधराणि प्रायेण मुनयो जगुः"

शार्ङ्गधर में लिखा है—जिन स्थानों पर आघात (चोट) लगने से मनुष्य शीघ्र मर जाता है वे मर्म स्थान हैं। ऊपर का श्लोक इसका साक्षी है। इसमें तो बहुत स्पष्ट कहा है कि जीव धारण के अधिकतर स्थान मर्म स्थान ही हैं। ऋषि मुनियों की यही मान्यता है। उन मर्म स्थानों में लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र भी हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सन्निपातः, शिरा-स्नायु-संधि-मांसास्थि-संभवः ।
मर्माणि तेषु तिष्ठन्ति प्राणाः खलु विशेषतः ॥
(भा० प्र० पूर्वखण्ड) १ ।

शिरा, स्नायु, सन्धि मांस और अस्थि जहां एक स्थान पर होती हैं उसको मर्म स्थान कहते हैं । क्योंकि वहां पर विशेष रूप से प्राण रहते हैं । इससे सिद्ध होता है कि इन मर्म स्थानों पर लगी चोट प्राणघातक होती है । अतः इन मर्म स्थानों की रक्षा करना प्रत्यावश्यक है । शिव संहिता में लिखा है—

अत ऊर्ध्वं तालुमूलं सहस्रारसिरोरुहम् ।
अस्ति यत्र सुषुम्णानां मूलं सविस्तरं स्थितम् ॥ १५६ ।

इससे आगे तालु के मूल से जहां सहस्रों शाखायें शिर के उस भाग में एकत्रित होती हैं, जहां कि सुषुम्णा का मूल स्थान है, वही शिखा (चोटी) रखने का स्थान है ।

तालुस्थानं च यत् पद्मं सहस्रारं पुरोहितम् ।
तत् कन्दयोनिरेकोऽस्थि पश्चिमाभिमुखं गतः ॥१६१।

तालु के उस ऊपर के भाग में जहां हजारों केन्द्रगामी तारों का स्थान है, वहां कन्द नाम की एक अस्थि वा हड्डी है । यह शिर के पश्चिम भाग में होती है । (१६१)

तस्या मध्ये सुषुम्णाया मूलं सविस्तरं स्थितम् ।
ब्रह्मरन्ध्रं तदेवोक्तं मूलाधारपंकजम् ॥१६२॥

उसके मध्य में सुषुम्णा का स्थान है । इसी को ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं । ऊपर कह चुके हैं कि मनुष्य के शरीर में १०७ मर्म स्थान होते हैं । उनमें से कुछ मर्मस्थान ऐसे हैं कि जिन पर चोट लगने से मनुष्य बहुत ही शीघ्र मर जाता है । सुषुम्णा का स्थान भी ऐसा ही है । भावप्रकाश पूर्वखण्ड १ में लिखा है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्यः प्राणहराणि स्युर्मर्माण्येकोनविंशतिः ।
भ्रृ गारकान्यधिपतिः शिखा कण्ठं शिरो गुदम् ।
हृदयं वस्तिर्नाभिश्च सद्यो हन्ति हतानि चेत् ॥

उन्नीस ऐसे मर्म स्थान हैं जिनमें चोट लगने से प्राण तत्काल निकल जाते हैं। शिर के ऊर्ध्व भाग में सब मर्मस्थान हैं वहीं पर सुषुम्णा केन्द्र चोटी का स्थान है। इन्हीं पर चोट लगने से तुरन्त प्राण निकल जाते हैं और मृत्यु हो जाती है। इस श्लोक में पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि सुषुम्णा केन्द्र का मर्मस्थान सब मर्मस्थानों से अधिक भयानक है। यहां साधारण चोट वा आघात से मनुष्य तत्काल ही मृत्यु का ग्रास बन जाता है।

अधिपतिर्मस्तकस्याभ्यन्तरे सन्धिशिरसोः सन्निपातः, उपरिष्टाद् रोमावर्तः स एकः सन्धि .....मर्धांगुलप्रमाणं सद्योमाकम् ।

भावप्रकाश पूर्व ख० १४

शरीर का अधिपति स्वामी मस्तक है, उसके मध्य में जहां सन्धियों का एकत्रीकरण है और जिसके ऊपर 'बालों का' एक बड़ा समूह रहता है उसे ही शिखा वा चोटी कहते हैं। वहीं पर एक सन्धिस्थान है जहां आधे अंगुल का मर्मस्थान है। उस पर आघात लगने से तुरन्त मृत्यु हो जाती है।

वेद भगवान् भी मर्मस्थानों की रक्षार्थ आदेश देता है।

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि ।
सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ सामवेद उ० अ० ३१।

मर्मस्थानों की रक्षार्थ वेद ने कवच धारण करने की आज्ञा दी है। युद्ध में इसीलिए कवच आदि धारण करते हैं। सभी उपायों से मर्मस्थानों की रक्षा करनी चाहिये। जो वार्ता शरीर-विज्ञान में है वही आयुर्वेद तथा वेद से भी पुष्ट होती है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमने जिन स्थानों को सुषुम्णाकेन्द्र बताया है वही स्थान ब्रह्मरन्ध्र है। इसी स्थान को ज्ञानपथ भी कहते हैं और इसी स्थान पर शिखा धारण की जाती है।

श्री कृष्णकुमार अध्यापक के साथ सोमवीर राजवीर सत्यवीर और धर्मवीर आदि अनेक विद्यार्थी सत्सङ्ग में आये थे वे अपने अध्यापक का संकेत मिलने पर अनेक प्रश्न करते हैं।

सोमवीर—आपने शरीरविज्ञान के अनुसार तो चोटी का महत्व बताने की कृपा नहीं की, केवल वेद आयुर्वेदादि के प्रमाण दिये हैं।

आचार्य—प्रिय पुत्र! शरीरविज्ञान की बात भी सुन लो। हमारे शरीर की रचना के साथ शिखा का विशेष सम्बन्ध है। इस विषय में एक विदेशी विद्वान् अर्ल थामसन का मत आपके ज्ञानार्थ देता हूँ उसने 'अलार्म मैगजीन' सन् १९२१ अंक ७१ पृष्ठ १९६ पर यह लिखा है 'सुषुम्णा की रक्षा आर्य लोग चोटी रख कर करते हैं और यूरोप के देशों में शिर पर बाल रख कर। मैं इन दोनों में से विज्ञान की दृष्टि से चोटी रखना अधिक उपयोगी समझता हूँ क्योंकि वह ठीक उसी स्थान की रक्षा करती है जिस की मनुष्य जीवन के लिए सबसे अधिक आवश्यकता है।' श्री अर्ल थामसन १९१४ की दुनियां अर्थात् उस काल का माना हुआ योगी है।

राजवीर—किसी पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली के विशेषज्ञ डाक्टर की भी चोटी के विषय में सम्मति बताने की कृपा करें।

आचार्य—प्रिय वत्स! डाक्टरों की सम्मतियां आपके लाभार्थ बताता हूं। सर चार्ल्स पार्लिल्यूकिस पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली 'ऐलोपैथी' के विशेषज्ञ थे, इन्होंने अपने विचार सरस्वती पत्रिका सन् १९१४ अंक ७ में इस प्रकार प्रकट किये थे "चोटी का शरीर

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के उस आवश्यक अंग से बहुत सम्बन्ध है जिससे कि ज्ञानवृद्धि और शरीर के सम्पूर्ण अंगों का संचालन होता है। जब से मैं चोटी के वैज्ञानिक महत्व को समझा हूं तब से मैं स्वयं भी चोटी रखता हूँ।"

इसी प्रकार डा० ह्यूमन ने सन् १८९९ में गार्डन मैगजीन अंक २५८ पृष्ठ १२३ पर अपने विचार इस प्रकार प्रकट किये थे—"मैंने कई वर्षों तक भारत में रहकर आर्य संस्कृति का अध्ययन किया है। आर्य लोग बहुत काल से चोटी रखते हैं जिसका उल्लेख वेदों में भी पाया जाता है। दाक्षिणात्य तो आधे शिर पर ही चोटी रखते हैं। मैं उनकी विलक्षण बुद्धि से बहुत प्रभावित हुआ हूं। चोटी बुद्धि के विकास में अवश्य कुछ न कुछ सहायता देती है। चोटी रखना वा शिर पर बाल अधिक रखना हितकर है। यूरोप का कोई भी देश ऐसा नहीं जो शिर पर बड़े बड़े बाल न रखता हो। मेरा हिन्दू धर्म में अगाध विश्वास है।

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी ! क्या भारत देश के समान अन्य किसी देश के लोग भी यह शिखा रखते हैं ?

आचार्य—फिलेडेल्फिया (अमेरिका) के प्रसिद्ध विद्वान् डा० आई० ई० क्लार्क एम० एस० डी० लिखते हैं "जब मैं चीन में भ्रमण करने गया तब मुझे यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि चीनी लोग भी भारतवासियों के समान आधे शिर पर बाल रखते हैं। मैंने इस विज्ञान की जब से खोज की है तब से मुझे यह विश्वास हो गया है कि आर्य लोगों का प्रत्येक नियम वा कार्य विज्ञान से ओत प्रोत है और चोटी रखना आर्य लोगों का धर्म ही नहीं है अपितु सुषुम्णा के केन्द्रों की रक्षा के लिए ऋषि मुनियों की खोज का एक विलक्षण चमत्कार है।

धर्मवीर—पूज्य आचार्य जी ! हम तो आज तक सर्वथा अन्धकार में ही थे कि चोटी हमारी उन्नति में इतनी सहायक है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम तो आज तक यही समझे बैठे थे कि भारत के ये हिन्दू जिन्हें आप बार बार आर्य नाम से सम्बोधित करते हैं, सभी मूर्ख हैं, रूढिवादी हैं, योंही बाल्यकाल से चोटी रखते हैं। जब हम अपने माता पितादि से प्रश्न पूछते थे कि यह चोटी क्यों रखी जाती है तो वे यही उत्तर देते थे कि चोटी हिन्दुत्व का चिह्न (निशानी) है। इसलिये जो चोटी हमारे माता पिता ने बाल्यकाल में हमारे शिरों पर रखी थी कुछ वर्ष तो लज्जा भय के कारण हम उसे रखते रहे किन्तु जब नवीं दशवीं श्रेणी में हुये तो अपने सभी सहपाठियों के साथ इसे सर्वथा निरर्थक और ढोंग समझ कर कटवा डाला। प्रायः स्कूल कालिज के सभी विद्यार्थी ऐसा ही कर रहे हैं। यदि हमें यह ज्ञान होता कि चोटी रखने से इतने लाभ होते हैं तो हम कभी भी चोटी कटवाने की यह भयंकर भूल न करते। आपके उपदेश से हमारी आंखें खुल गईं। जो विद्यार्थी आपके सत्संग में आये हैं वे तो आज से ही ये अंग्रेजी ढंग के बाल कटवा कर आपके गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के समान चोटी रखेंगे। स्कूल कालिज में जाकर अन्य विद्यार्थियों को शिखा रखने की प्रेरणा करेंगे।

आचार्यप्रवर! क्या चीन के समान आजकल भी भारत को छोड़कर अन्य देशों में चोटी रखते हैं?

आचार्य—प्रिय वत्स! जापान देश इस समय भौतिक दृष्टि से उन्नति के शिखर पर है। शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक दृष्टि से इस देश ने बड़ी उन्नति की है। आपने समाचारपत्रों में पढ़ा होगा कि थाईलैण्ड की राजधानी बैंकाक में दो वर्ष पूर्व सारे एशिया महाद्वीप के खेलकूद हुए थे। उन खेलों में जापान देश का सारे एशिया में सर्वप्रथम स्थान रहा। इसने सभी खेलों में मिलाकर ७२ स्वर्ण पदक लिये। जो भारत देश कभी सारे संसार का शिरोमणि माना जाता था, उसे केवल ६ ही स्वर्ण पदक मिले।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जापान के पहलवानों को सम्भवतः आपने देखा हो वा सुना हो कि आज भी सभी जापानी पहलवान शिर पर चोटियां रखते हैं। और गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के समान अपनी मोटी चोटियों को गांठ देकर बांधे रखते हैं।

कृष्णकुमार—पूज्य आचार्य जी ! हमें चोटी रखने के लाभों का तो कुछ ज्ञान हो गया किन्तु हम पूर्ण रूप से यह नहीं समझ सके कि सिर में चोटी रखने का ठीक स्थान कौनसा है।

आचार्य—माननीय अध्यापक जी ! चोटी वा शिखा शिर के सबसे ऊँचे उठे हुये भाग के मध्य में रखी जाती है। जहां आपको बच्चों के शिर पर भंवर रूपी बाल दृष्टि पड़ते हैं वही स्थान तथा उसके निकट चोटी रखी जाती है इसी के नीचे अधिपति नामी मर्मस्थल और जिसे संस्कृत में शीर्ष कहते हैं। इसके नीचे मस्तिष्क होता है। हमारा मस्तिष्क आठ अस्थियों (हड्डियों) से ढका हुआ है। इन अस्थियों के ऊपर बाल होते हैं। और यही शिर का सबसे ऊँचा स्थान है जहां चोटी रखी जाती है।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी ! जिस स्थान पर चोटी रखी जाती है उस ऊँचे स्थान के नीचे क्या क्या अङ्ग होते हैं।

"लेखक ने जापान देश के पहलवानों की, जब अपनी जापान की यात्रा पर गया तो टेलीवीजन पर वहां बहुत पहलवानों की कुश्तियां देखीं। सारे जापानी पहलवान शिर पर मोटी मोटी चोटियां गांठ से बांधकर रखते हैं। लेखक को भी बड़ा आश्चर्य हुआ। यह भारत के आर्यों का ही अनुकरण है। क्योंकि सारे संसार में पहले आर्य वा वैदिक धर्म का प्रचार था। तब सभी देशों के निवासी आर्यों के इस पवित्र लाभकारी वैदिक संस्कृति के प्रतीक शिखा सूत्र और मेखला को धारण करते थे। जापान के पहलवानों में अब वही परम्परा चली आ रही है। इसी कारण से वे सब मोटी मोटी चोटियां रखते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य—पुत्र ! यह बड़ा अच्छा प्रश्न आपने पूछा। जिस स्थान पर चोटी रखते हैं उस स्थान के नीचे मस्तिष्क, लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा नाड़ियां रहती हैं। लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र ठीक उसी स्थान के नीचे हैं जिस स्थान पर चोटी रखी जाती है। शारीरिक विज्ञान यही बतलाता है कि चोटी लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्रों की सुरक्षार्थ रखी जाती है। इसीलिये दयालुदेव करुणामय भगवान् ने मानव कल्याण के लिये वेद में चोटी रखने की आज्ञा दी है। और इसीलिये ऋषि महर्षियों ने इसके रखने का प्रचार सदैव किया है।

राजवीर—यह मस्तिष्क, लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र क्या है। इनका क्या क्या कार्य है और चोटी इनकी कैसे रक्षा करती है। यह पूर्णरूप से समझ में नहीं आया, आपकी महती कृपा होगी, यदि यह हमें समझा देवें।

आचार्य—यदि इस पर विस्तार से लिखा जाये तो एक मोटा ग्रन्थ बन जाये और व्याख्यान द्वारा व्याख्या की जाय तो कई दिन लगें। फिर भी इन आवश्यक अङ्गों की सामान्य जानकारी के बिना कोई भी यह नहीं समझ सकता कि इन अङ्गों की रक्षा क्यों और कैसे हो सकती है। तथा चोटी द्वारा इनकी रक्षा कैसे होती है। आपके ज्ञानार्थ इन अङ्गों का संक्षिप्त वर्णन करते हैं।

बृहत् मस्तिष्क। यह कुछ अण्डे के समान आकारवाला होता है। इसका पिछला भाग अगले भाग की अपेक्षा अधिक चौड़ा और मोटा है। इसमें अनेक नाड़ियां भी लगी रहती हैं जिनके द्वारा हम देखना, सुनना, सूंघना, बोलना तथा नेत्रादि चलाने की क्रिया वा कार्य करते हैं। यदि बृहत् मस्तिष्क की ये नाड़ियां विकृत हो जावें वा अपना कार्य करना छोड़ देवें तब हमारा सुनना देखना

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और बोलना आदि कार्य कुछ नहीं हो सकता।

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी ! यह लघु मस्तिष्क क्या कार्य करता है ?

आचार्य—प्रिय पुत्र ! लघु मस्तिष्क, वृहत् मस्तिष्क से बहुत छोटा होता है। इसकी आकृति पिचके हुए गोले के समान होती है। यह दीर्घ गोले जैसा होता है। इसकी चौड़ाई दाहिनी ओर से बाई ओर तक चार इन्च होती है और मोटाई ऊपर के पृष्ठ से नीचे के पृष्ठ तक एक इन्च होती है। इसका भार 2½ छंटाक के लगभग होता है। लघु मस्तिष्क बड़े मस्तिष्क के नीचे रहता है। इस पर घाइयां (गढ़े से) होती हैं। जो वृहत् मस्तिष्क की घाइयों से अधिक गहरी होती हैं।

धर्मवीर—यह लघु मस्तिष्क कार्य क्या करता है ?

आचार्य—पुत्र ! आप अपने सब साथियों में आयु में सबसे छोटे प्रतीत होते हो, किन्तु बुद्धिमान् प्रतीत होते हो। अपने प्रश्न का उत्तर सुनो।

लघु मस्तिष्क का कार्य :—जब हमारे शरीर में कोई गति होती है तब कुछ मांस पेशियों का संकोच और कुछ मांस पेशियों का विस्तार होता है। उदाहरण से सब समझ जायेंगे। जैसे आपके पैर पर गर्म जल गिर जाये तब उस गर्म जल की गर्मी से पैर की त्वचा (चमड़ी) के सांवेदनिक कणों (पीड़ा के ज्ञान कराने वाले) वा तन्तुओं में विशेष परिवर्तन होगा। इस परिवर्तन की सूचना त्वचीय (त्वचा के) तारों द्वारा सुषुम्णा को तत्काल पहुंच जाती है, और लघु मस्तिष्क के केन्द्रों द्वारा हमको सहसा अनुभव होने लगता है कि पैर जल गया है। इसी प्रकार सभी वस्तुओं का अनुभव वा ज्ञान भी हमें प्रतिक्षण होता रहता है। यदि ये त्वचा के तार लघु मस्तिष्क तक पहुंच जायें और उनके केन्द्रों को सूचना भी दे देते,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किन्तु यदि सुषुम्णा का केन्द्र स्थान खराब हो जाये तो हमें किसी प्रकार का भी ज्ञान वा अनुभव नहीं होगा। इसलिए बुद्धि के विकास के लिए लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा की सुरक्षा होनी चाहिए। इनकी सुरक्षा से बुद्धि का विकास ज्ञान की प्राप्ति होगी, और ज्ञान से ही इह लोक तथा परलोक दोनों में सफलता मिलेगी। अभ्युदय और निश्रेयस् दोनों की सिद्धि ज्ञान पर निर्भर है। इसलिए ज्ञान को बढ़ाने के लिए लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा के केन्द्रों की सुरक्षा अत्यावश्यक है। इनकी रक्षा का मुख्य साधन चोटी है।

कृष्ण कुमार—पूज्य आचार्य जी! आप ने अपने प्रवचन में ज्ञानपथ की चर्चा की थी किन्तु इसे व्याख्या करके समझाया नहीं, इसे भी समझाने की कृपा करें।

आचार्य—ज्ञान पथ—हमारी पांच ज्ञानेन्द्रियां हैं। नासिका रसना, चक्षु, स्पर्शेन्द्रिय, त्वचा और श्रोत्र। इन ज्ञानेन्द्रियों से मस्तिष्क के जो ज्ञानकेन्द्र हैं उन तक अथवा मानस क्षेत्र तक ज्ञान वा संवेदना के ज्ञान का जो मार्ग है, उसे ज्ञान पथ कहते हैं। किसी विशेष ज्ञानार्थ निम्न साधनों की आवश्यकता है—

१. ज्ञानेन्द्रिय, नासिका त्वचा चक्षु इत्यादि।
२. सांवेदनिक वा ज्ञानवाही तार जो नाड़ियों द्वारा सुषुम्णा वा मस्तिष्क में पंहुचते हैं।
३. ज्ञान केन्द्र।
४. मानस केन्द्र

इन सम्पूर्ण मानस केन्द्रों का मुख्य स्थान सुषुम्णा और लघु मस्तिष्क है। यदि इन केन्द्रों का भाग भी नष्ट हो जाए तो किसी न किसी ज्ञान की न्यूनता अवश्य हो जाएगी। इस प्रकार सभी ज्ञान केन्द्रों को समझना चाहिए। इसलिए इन ज्ञान केन्द्रों के स्थान की रक्षा भी अत्यन्त आवश्यक है। प्रथम तो इस स्थान की रक्षा वृहत्

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्तिष्क से होती है। क्योंकि यह उसके ऊपर होता है। दूसरी उसकी रक्षा खोपड़ी की कठोर और सुदृढ़ अस्थियों (हड्डियों) से होती है। इस पर भी खोपड़ी पर बाल होते हैं। इन सबसे अधिक रक्षा चोटी से होती है, जो कि केवल सुषुम्णा और लघु मस्तिष्क की रक्षार्थ इनके ऊपर रखी जाती है। इस प्रकार नूतन पाश्चात्य शरीर विज्ञान भी यही सिद्ध करता है कि शरीर और बुद्धि की रक्षार्थ चोटी का रखना अत्यावश्यक है।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी! चोटी ऊपर लिखे मर्मस्थानों की रक्षार्थ कितनी मोटी होनी चाहिये।

आचार्य-सद्य प्रसूत (तुरन्त ब्याई हुई) गाय के बछड़े के पैर के खुर की जितनी चौड़ाई और मोटाई होती है उतने स्थान पर चोटी रखनी चाहिये। क्योंकि लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र का स्थान भी इतना ही होता है। इसमें वेद की शाखा का प्रमाण है। "याज्ञिकैर्गोदर्णि मार्जनि गोक्षुर्वच्च शिखा"

(यजुर्वेदीय कठ शाखा)

अर्थात् गोक्षुर के समान चोटी रखनी चाहिये, लघु मस्तिष्क की लम्बाई तथा चौड़ाई और उसकी आकृति गौ के खुर से बहुत कुछ मिलती है। प्रतीत होता है कि इसलिये शास्त्र ने गौ के खुर के समान चोटी रखने का आदेश दिया है। इसी स्थान की माप की विधि निम्न प्रकार से वैद्य धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ने अपनी पुस्तक चोटी का महत्व में लिखी है। माथे के ऊपर के उस भाग से जहां से शिर के बाल उगने आरम्भ होते हैं और ग्रीवा (गर्दन) के उस भाग तक जहां कि शिर के बालों का अन्त होता है, नाप लो। और इस माप के चार भाग कर लो। माथे की ओर के दो भाग कर दो और एक भाग गर्दन की ओर का छोड़ दो, जितना स्थान बाकी माप के चौथे हिस्से का हो, उतने स्थान में चोटी रखो। यह

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सद्योत्पन्न गाय के बछड़े के खुर के समान ही होता है।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी! यह तो समझ में आगया कि चोटी शिर के सबसे ऊँचे स्थान पर और गाय के तुरन्त जाये बछड़े के खुर के समान रखनी चाहिये किन्तु किस आयु में इसे रखना चाहिये।

आचार्य—पुत्र! शिखा रखने का समय नियत है। आर्यों के सोलह संस्कारों में एक संस्कार चूड़ाकर्म वा केशछेदन संस्कार है। इसका समय आश्वलायन गृह्य सूत्र में—"तृतीये वर्षे चौलम्" तृतीय वर्ष में चौल वा केश कटवाने का समय लिखा है। पारस्कर गृह्यसूत्रादि में "सांवत्सरिकस्य चूडाकरणम्" बालक का मुण्डन (केश कर्तन) एक वर्ष का होने पर हो जाना चाहिये। जब मुण्डन संस्कार होता है उस समय तो सभी केशों को काट दिया जाता है किन्तु जब बालक के बाल दूसरी बार काटे जायें तो उसके शिर पर शिखा रखने का विधान है।

"केशानां शेषकरणं शिखास्थापनं केशशेषकरणम्।"

इति मंगल हेतोः। (पारस्कर गृह्यसूत्र) शिखा को रखकर शेष सभी केशों को कटवादें यही मंगल का हेतु है। इन पर टीका करते हुये पं० जयराम जी लिखते हैं—"शिखां रक्षित्वा मुण्डयेत्"* शिखा को रखकर सब केशों को चारों तरफ से मुण्डवा दें। एक दो सप्ताह वा एक दो मास में मुण्डन संस्कार के पश्चात् जब दूसरी बार बालक के बाल कटवावें तब ही शिखा (चोटी) अवश्य बालक के शिर पर रखवादें। यही शास्त्रों का विधान है। गर्भ के सभी बालों को प्रथम बार तो क्षुर (उस्तरे) से मुण्डवा देना चाहिये।

---

* नोट—पारस्कर गृह्यसूत्र पं० जयरामजी की की हुई टीका १०० वर्ष पुरानी छपी हुई है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इससे अनेक फोड़े फुंसी आदि रोग नहीं होते। गर्भ में नौमास रहने से मस्तिष्क में जो अधिक उष्णता होती है वह बाल कटवाने से निकल जाती है। अधिक उष्णता के कारण होने वाले रोगों से बालक बचा रहता है। बालकों को दांत निकलने के समय ज्वर, अतिसार, वमनादि रोग बहुत सताते हैं। वह मुण्डन वा केशान्त कराने से नहीं होते। अत पहली बार सभी शिर के बाल मुण्डवा दिये जाते हैं। मुण्डन संस्कार का समय १ वर्ष से तीन वर्ष तक रखा है। और दांत जाड़ आदि निकलने का लगभग यही काल होता है। अर्थात् एक वर्ष से पहले दांत निकलने प्रारम्भ होते हैं और सब तीन वर्ष की अवधि के भीतर निकल आते हैं।

कृष्णकुमार—पूज्य आचार्य महोदय! शिखा (चोटी) से शारीरिक लाभ तो होते हैं। क्या इससे कोई आध्यात्मिक लाभ भी होता है। क्या आत्मिक उन्नति में भी चोटी सहायता करती है?

आचार्य—माननीय अध्यापक जी! कहने को तो संसार में अनेक संस्कृतियां हैं किन्तु जिसे हम संस्कृति कह सकते हैं वह वैदिक संस्कृति ही है। यह सबसे प्राचीन और सारे विश्व की संस्कृति है। आत्मिक उन्नति के लिये सबसे अधिक साधन वैदिक संस्कृति ने ही बताये हैं यह सर्वोच्च संस्कृति है जैसे इतिहास में प्रसिद्ध है—

गढ़ तो चित्तौड़गढ़ और सब गढैय्या।
रानी तो पद्मावती और सब पदय्या॥

इस प्रकार वैदिक संस्कृति के सन्मुख सब संस्कृतियों को समझें। क्योंकि आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त सारे संसार की एकमात्र संस्कृति वैदिक संस्कृति ही रही है। और सारे संसार का धर्म भी वैदिकधर्म ही रहा है। वेद विश्व के पुस्तकालय की सबसे प्राचीन पुस्तक है। इस सत्य को Rigveda is the oldest

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

book in the world liberary. पाश्चात्य विद्वानों ने सर्वसम्मति से स्वीकार किया है कि वेद की संस्कृति ही सबसे प्राचीन है। इसी को भारतीय और आर्ष संस्कृति भी कहते हैं।

सामवीर—वैदिक संस्कृति जब सारे संसार की संस्कृति है तो इसे भारतीय और ऋषियों की संस्कृति कहना क्या इसकी महत्ता को घटाना नहीं है ?

आचार्य—प्रिय पुत्र ! ऐसी बात नहीं है। ये इसके ऐतिहासिक नाम हैं। क्योंकि आदि सृष्टि में पवित्र वेदों का ज्ञान परम पिता परमात्मा ने चार ऋषियों के हृदय में प्रकाशित किया। वह भारत के एक भाग त्रिविष्टप् (तिब्बत) में ही किया। जहां परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में मानव का उत्पत्ति की थी। सर्वप्रथम भारत में इसका उद्भव और प्रचार व प्रसार हुआ। अतः यह भारतीय संस्कृति भी कहलायी। ऋषियों को सर्वप्रथम इस संस्कृति का ज्ञान हुआ और सारे संसार में इसका प्रचार भी ऋषियों ने ही किया। अतः यह आर्ष संस्कृति के नाम से प्रसिद्ध हुई। भारत ने और ऋषियों ने इसके लिए अपना सर्वस्व लगा कर इसे चार चांद लगा दिये। इसके प्रचार का सब श्रेय भारत देश और ऋषियों को मिलना ही चाहिये। क्योंकि कृतज्ञता तो इस संस्कृति का विशेष गुण है। अतः किये हुये उपकार को सारे संसार ने एक स्वर से स्वीकार किया है और इसका नाम भारतीय और आर्य संस्कृति रखा। भारत और ऋषियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट की है। जो श्रेष्ठ मनुष्यों का विशेष गुण है।

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी ! शिखा वा चोटी का वैदिक संस्कृति से क्या सम्बन्ध है ?

आचार्य प्रिय पुत्र ! जिस प्रकार शिर पर चोटी का स्थान सबसे ऊंचा है सबसे ऊंचे स्थान वा शिखर पर रखने से इसका

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिखा नाम और चोटी के स्थान पर अर्थात् ऊंचे स्थान पर रखने से चोटी कहलाती है। अर्थात् शिखा और चोटी "यथा गुण तथा नाम" के अनुसार है। इसी प्रकार संसार में सर्वश्रेष्ठ और सब संस्कृतियों से चोटी के समान उच्च होने से वैदिक संस्कृति सब से महनी संस्कृति है। जैसे गौरीशंकर हिमालय की सबसे ऊंची चोटी वा शिखा (शिखर) है उसी प्रकार वैदिक संस्कृति भी सबकी शिरोमणि महती, होने से सबकी चोटी वा शिखा तुल्य है।

रणवीर—चोटी वा शिखा का सम्बन्ध वैदिक सस्कृति से किस प्रकार है यह तो आपने बताया ही नहीं।

आचार्य—प्रिय पुत्र! आप उतावले हैं, मैं वही तो आप सब को बतला रहा हूं किन्तु धैर्य धारण करो, वैदिक संस्कृति का प्रथम स्तम्भ धीरज ही है। इसलिए इस वैदिक धर्म का प्रथम लक्षण धृति ही है। ध्यान और धैर्य दोनों ही गुण श्रोता में होने चाहियें। चोटी वैदिक संस्कृति का एक प्रतीक है। जैसे सब राष्ट्रों की अपनी अपनी ध्वजा वा पताका होती है, इसी प्रकार शिखा वा चोटी वैदिक संस्कृति की ध्वजा है। ध्वजा का एक नाम वाहन भी है। क्योंकि वहन करने से, आगे ले जाने के कारण ध्वज का नाम वाहन पड़ा। ध्वज वा वाहन सदैव आगे आगे रहता अथवा सबसे ऊंचे स्थान पर रहता है। उसी प्रकार चोटी वा शिखा का स्थान भी शिर में सबसे उच्च है। चोटी का प्रतीक यही सिद्ध करता है कि वैदिक संस्कृति ऊंचा ले जानेवाली है, ऊर्ध्वगामी है, आगे की ओर, उन्नति की ओर ले जानेवाली है। असंख्य योनियां हैं। पौराणिक भाई चौरासी लाख योनियां मानते हैं। इन असंख्य शरीरों वा योनियों में चक्कर काटते काटते मानव का श्रेष्ठ चोला (योनि) प्राप्त कर ऊंचा बनना है,

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोटी पर चढ़ना, शिखर (शिखा) पर पहुंचना है। सब वृत्तियों को एकाग्र करके ब्रह्मरन्ध्र में ध्यान लगाकर समाधि सिद्ध करनी है। ब्रह्म का साक्षात्कार करना है। प्रभु की प्राप्ति आनन्द की प्राप्ति अथवा यों कहिये परमपद की प्राप्ति करनी है। चोटी यही शिक्षा देती है, ऊँची चढ़ाई पर चढ़ना है चोटी पर चढ़ना है, उस स्थान पर चढ़ना है जहां चढ़ने के पीछे और ऊपर चढ़ने की इच्छा समाप्त हो जाती है। ब्रह्म प्राप्ति, मोक्ष प्राप्ति, परमपद प्राप्ति सबसे ऊँचा लक्ष्य उन्नति का उच्चतम शिखर है। उच्च पद की पराकाष्ठा है। उस सर्वोपरि चोटी वा शिखा पर, आदर्श पर पहुंचने के लिये ही हमारी चोटी एक वैदिक संस्कृति की प्रतीक है। ध्वज है, पताका है, आश्रय है, सहारा है, सोपान है, जो सदैव हमें शीर्ष पर, ऊँचे स्थान पर चढ़ने के लिये, पहुँचने के लिये प्रेरणा करती रहती है।

धर्मवीर—क्या अन्य संस्कृतियों से यह प्रेरणा नहीं मिलती?

आचार्य—प्रिय वत्स! इस समय यूरोप का पृथ्वी व्यापी प्रभाव और प्रतिष्ठा है। यूरोप ने दो शिक्षाओं का प्रधानतः सहारा लिया है। इनमें प्रथम है क्रमोन्नति (Evolution) और दूसरा है योग्यतम की जय (Sarvival of the Fittest)। योग्यतम की जय का नारा लगाकर सहज ही में दुर्बल के मुख से भोजन का ग्रास निकाल लेता है। सैंकड़ों मनुष्यों को अन्न से वंचित कर देता है। एक एक करके सारी जाति को निगृहीत, निरीड़ित और निस्सहाय कर देता है। अपनी अतर्पणीय धनलालसा को पूरी करने के लिये यूरोप एक मनुष्य को नहीं, दस मनुष्य नहीं, सौ मनुष्य नहीं बल्कि बड़ी से बड़ी जाति को भी विध्वस्त कर डालता है। आज यूरोप की दुर्निवार्य्य भोगतृष्णा ने मनुष्य ही नहीं, वरन् पशु पक्षी और स्थावर जंगम तक को अस्थिर और अधीर कर डाला है। यूरोप

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी भोग विलास की पिपासा की तृप्ति के लिये लखुखा मनुष्यों के सुख और स्वतन्त्रता को सहज में ही हरण कर लेता है। सारी पृथ्वी इसी कारण नरक बनी हुई है। शान्तिदेवी संसार से मुख छिपा कर पलायमान हो गई है। यूरोप ने सारे संसार को सुख शून्य और शान्ति शून्य बना रखा है। यूरोप की शिक्षा प्रणाली ने सारे संसार को वञ्चना, प्रतारणा, छल-कपट, मिथ्या व्यवहार और मुकदमेबाजी में फंसा रखा है।

सत्यवीर—आपने सारे दोष यूरोप और उसकी शिक्षा, सभ्यता और संस्कृति पर मंढ दिये। संसार का शिक्षित और सभ्य बनाने में क्या यूरोप का हाथ नहीं है?

आचार्य—प्रिय पुत्र! यूरोप ने संसार का जितना अनिष्ट और अकल्याण किया है उसे पूर्ण रूप में वाणी कह नहीं सकती, लेखनी लिख नहीं सकती। क्योंकि सबसे बड़ा अनिष्ट और अहित यही है कि यूरोप की शिक्षा ने मनुष्य जीवन की प्रगति को सर्वथा उल्टा करने का प्रयत्न किया है। जिस मनुष्य ने निरन्तर मुक्तिरूपी शान्ति पाने के उद्देश्य से जन्म लिया था। हाय! यूरोप तूने उसे धन का दास और दुर्निवार्य्य (कभी न पूर्ण होने वाली) भोगेच्छा का क्रीत किङ्कर बनने के लिये शिक्षित और दीक्षित कर दिया है।

यूरोप वा पाश्चात्य शिक्षा का उद्देश्य इसी सिद्धान्त का नाना भाव और नाना प्रकार से प्रचार और विस्तार करना है कि धन सञ्चय करना ही मनुष्य जीवन में सबसे अधिक वाञ्छनीय है। यूरोप भोगमय और भोगसर्वस्व है।

जो वृत्ति मनुष्य समाज में प्रथम वा प्रधान स्थान पर आरूढ़ थी। यूरोप तूने उसे नीचे स्थान पर रखने का निर्देश किया है और जो वृत्ति सबसे नीचे स्थान पर थी उसे तूने प्रथम

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वा प्रधान पद पर आरूढ़ कर दिया है। तूने ब्रह्मवृत्ति का अपमान किया और उसे नीचे गिरा दिया है। और वैश्य वृत्ति का सम्मान किया और उसे सबसे ऊँचा आसन दिया है। ऐ यूरोप बता ? इसकी अपेक्षा और किस बात से मनुष्य का अधिकतर अनिष्ट साधन हो सकता है। यही यूरोप की शिक्षा सभ्यता और संस्कृति है जो सारे संसार में छायी हुई है। यूरोप ही अनार्ष ज्ञान का गुरु वा प्रचारक है। इसी से संसार का घोरतर अकल्याण होगा और मनुष्य समाज में नित्य नूतन अशान्ति की अग्नि प्रज्वलित होकर सबको भस्मसात् कर डालेगी।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी ! यूरोप की संस्कृति ऐसी दूषित क्यों है ?

आचार्य—प्रिय शिष्य ! इसका मुख्य कारण है यूरोप के गुरुजन।

धर्मवीर—वे कौन कौन हैं ?

आचार्य—वे तो असंख्य हैं, किन्तु मुख्य तो बेन (Bain) बेन्थम (Bentham) पेन स्पेन्सर (Spencer) कुन्त, काण्ट (Kant) प्लैटो (Plato) और पिथागोरस इत्यादि जाने माने यूरोप के प्रसिद्ध गुरुजन हैं।

सत्यवीर—ये तो यूरोप के चोटी के विद्वान् माने जाते हैं। क्या यह अनर्थ इन्होंने ही किया है ?

आचार्य—हां ये ही यूरोप के गुरु और विद्वान् हैं जिन्होंने बहुत सी जटिल समस्याओं की मीमांसा भी की थी किन्तु वे केवल तत्वों की खोज करने वाले ही रहे वे किसी वस्तु के प्रकृत स्वरूप वा विषय विशेष के यथार्थ तत्व का निश्चय करने में समर्थ नहीं हुये।

धर्मवीर—पूज्य आचार्य जी ! फिर ये यूरोप के विद्वान् सत्य

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दर्शन नहीं कर सके, इनको यथार्थ ज्ञान नहीं हुआ। ऋषि मुनियों में और इनमें क्या अन्तर है।

आचार्य—कहां राजा भोज कहां गाङ्गड़ा तेली, ऋषि महर्षि लोग जो आर्य भूमि को पवित्र कर गये, वे आप्तपुरुष थे।

सोमवीर—आप्तपुरुष किसे कहते हैं।

आचार्य—वत्स! जो पूर्ण विद्वान् धर्मात्मा, परोपकारप्रिय, सत्यवादी, पुरुषार्थी और जितेन्द्रिय होते हैं उन्हें आप्त पुरुष कहते हैं। क्योंकि वे जैसा अपनी आत्मा में जानते हैं और जिसमें उन्होंने सुख पाया हो उसी के कथन की इच्छा से प्रेरित होकर सब मनुष्यों के कल्याणार्थ उपदेष्टा हो अर्थात् पृथ्वी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करके अर्थात् पूर्ण विद्वान् होकर जो संसार के कल्याणार्थ उपदेश करते हैं, ऐसे पुरुषों को आप्तपुरुष कहते हैं। उपरोक्त गुणों वाले ऋषि महर्षि ही तत्त्ववित् वा तत्त्वदर्शी थे। यूरोप के वेकन, डारविन, हकसले तो नाम के ही विद्वान् थे। वे यत्न करने पर अविद्या अन्धकार से विमुक्तचित्त नहीं हो सके, फिर वे कैसे यथार्थ तत्त्वज्ञान करने में समर्थ हो सकते थे। फिर उनकी शिक्षा से मनुष्य समाज में किस प्रकार शांति स्थापित हो सकती है। इस कारण यूरोप स्वयं अपनी अशांति की अग्नि में जल रहा है और जो भी व्यक्ति वा जाति किसी न किसी प्रकार यूरोप के संसर्ग में आजाती है उसे भी अशांति की अग्नि में जल कर भस्म होना पड़ता है।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी! इस अशांति को कैसे दूर किया जाये।

आचार्य—प्रिय वत्स! इस जगद्व्यापिनी अशांति का प्रतिकार एकमात्र आर्ष ज्ञान के विस्तार पर निर्भर है।

सत्यवीर—आचार्य जी! आर्ष ज्ञान का प्रचार फिर कैसे

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे संसार में हो सकता है।

आचार्य—प्रियपुत्र ! जैसे सारे संसार में पहले भी आर्ष ज्ञान वा वैदिक संस्कृति का प्रचार वा प्रसार था वैसे ही अब भी हो सकता है।

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी ! पहले कैसे हुआ था, हमें समझाने की कृपा करें।

आचार्य—प्रिय विद्यार्थी ! इस वैदिक संस्कृति के प्रचारक सहस्रों ऋषि हुये हैं। "अष्टाशीतिसहस्राणि ऋषीणामूर्ध्वरेतसां बभूवुः" ८८ अठासी सहस्र ऊर्ध्वरेता अखण्ड ब्रह्मचारी ऋषि हुये हैं जिनकी परम्परा ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त, यह ऋषियों की परम्परा मानी जाती है। आदि सृष्टि में महर्षि ब्रह्मा हुये। और महाभारत के समय महर्षि व्यास के शिष्य जैमिनि ऋषि हुये, यही भारत के गुरुओं की परम्परा है। इन्हीं ऋषियों ने वेद की पवित्र विद्या और सुशिक्षा द्वारा जिस नीति का क्रियात्मक प्रचार किया वही प्राचीन भारत की वैदिक संस्कृति है। इसी के वैदिक संस्कृति, आर्ष संस्कृति, आर्य संस्कृति और भारतीय संस्कृति आदि अनेक नाम हैं। नाम अनेक हैं किन्तु संस्कृति एक है। देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तरों में इस संस्कृति का प्रचार घूम घूम कर तथा दर्शन शास्त्र उपनिषद् आदि तथा अनेक सूत्रग्रन्थ लिखकर लेखों द्वारा वा आर्ष साहित्य द्वारा ऋषि महर्षि संसार के कल्याणार्थ करते रहे हैं। महाराजा इक्ष्वाकु से लेकर महाभारत पर्यन्त सारे संसार में वैदिक संस्कृति वा वैदिक धर्म का ही प्रचार था और सारे संसार में भारत देश का एकछत्र चक्रवर्ती राज्य आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त रहा है। हमारे देश में सर्वत्र ऋषि महर्षियों के आश्रम वा गुरुकुल थे जहां पर वैदिक संस्कृति का अध्ययन करने के

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए देश देशान्तरों से विद्यार्थी सदैव आया करते थे। मनु जी महाराज ने लिखा है—

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।
स्व स्वं चरित्रं शिक्षेरन् प्रथिव्यां सर्वमानवाः ॥

इस ब्रह्मर्षि देश में उत्पन्न हुये ब्राह्मण विद्वानों से अथवा ऋषि महर्षियों से भूगोल के सभी मनुष्य ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र दस्यु मलेच्छादि अपने अपने योग्य विद्या चरित्रों की शिक्षा और विद्या अभ्यास करें, यह आदेश था। इसी के अनुसार वैदिक संस्कृति के केन्द्र ऋषियों के आश्रम थे।

कृष्णकुमार—पूज्य आचार्य जी! वह काल तो बड़ा स्वर्णमय था जब सारे विश्व में वैदिक संस्कृति का प्रसार था। उस समय तो सभी चोटी मेखला और यज्ञोपवीत धारण करते होंगे? उस समय तो संसार स्वर्ग के समान ही होगा, ऐसे सुदिन क्या फिर भी आसकते हैं?

आचार्य—श्रीमान् जी कात्यायन स्मृति १ अ० ४ श्लोक में लिखा है—

सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च ।
विशिखो व्युपपत्तिश्च यत् करोति न तत्कृतम् ॥

अर्थात् सदैव यज्ञोपवीत धारण किये रहना चाहिये बिना यज्ञोपवीत के कभी भी न रहें और सदैव चोटी को गांठ लगाकर बान्धकर रखना चाहिये क्योंकि बिना चोटी के और बिना यज्ञोपवीत यदि कोई धार्मिक कृत्य सन्ध्योपासन हवन यज्ञादि नित्य कर्म करता है वह न करने के ही समान है अर्थात् बिना चोटी बांधे और यज्ञोपवीत के बिना धार्मिक कृत्य और नित्यकर्म करने का निषेध है। करना न करना एक ही समान माना गया है अर्थात् व्यर्थ है। अतः ऋषियों की आज्ञानुसार शिखा सूत्रधारी सब को होना चाहिये।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थप्रकाश में लिखते हैं "जो विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाइयों के सदृश बन बैठना व्यर्थ है। जब पतलून आदि वस्त्र पहिरते हो और तमगों की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था।" इससे यही सिद्ध होता है कि शिखा (चोटी) और सूत्र यज्ञोपवीत जनेऊ सब को धारण करना चाहिये, बिना इनके नहीं रहना चाहिये, क्योंकि ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं। प्राचीनकाल में जब विश्ववारा वैदिक संस्कृति का प्रचार था तब सर्वत्र सुख शांति का साम्राज्य था। केकय राजा अश्वपति ने महर्षि उद्दालक मुनि आदि के आगे छाती तानकर घोषणा की थी—

"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥

मेरे जनपद में चोर नहीं है, और कोई कृपण (कञ्जूस मक्खीचूस) धनी नहीं है। कोई मद्यप अर्थात् शराब आदि नशेवाले पदार्थों के सेवन करने वाला नहीं है। सुरापान आदि मदकारी द्रव्यों का सेवन मेरे राज्य में नहीं होता। कोई ऐसा व्यक्ति भी नहीं है जो प्रतिदिन अग्निहोत्र (सन्ध्यादि) नित्य कर्म न करता हो। कोई अनपढ़ अशिक्षित व्यक्ति राज्य भर में नहीं है। सभी विद्या सुशिक्षा जनित वैदिक संस्कृति से सुशिक्षित आचारवान् हैं। कोई आचारहीन पुरुष सारे जनपद में ढूंडने से नहीं मिल सकता, फिर व्यभिचारिणी चरित्रहीन स्त्री कैसे हो सकती है। श्रेष्ठों का यथायोग्य सत्कार और दुष्टों को यथोचित दण्ड मिलने से अश्वपति का केकय जनपद स्वर्ग के सदृश था। इसी प्रकार प्राचीनकाल में भारत देश तथा सारा संसार ही वैदिक धर्म के प्रचार के कारण स्वर्ग समान था।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी ! चोटी और जनेऊ ये वैदिक संस्कृति के प्रतीक हैं। प्राचीनकाल में सभी इन्हें धारण करते थे। यह हम समझ गये। किन्तु आप कोई वेद मन्त्र का प्रमाण देकर यह बताने की कृपा करें कि यह विश्ववारा वैदिक संस्कृति क्या है ?

आचार्य—प्रिय विद्यार्थी ! आपने बड़ा अच्छा प्रश्न पूछा, आप बड़े चतुर प्रतीत होते हो, लो ध्यान से सुनो। यजुर्वेद में यह मन्त्र इस प्रकार है—

अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः ॥

यजु० ७।१४

पदार्थ—हे (देव) योग विद्या चाहने वाले (सोम) प्रशंसनीय गुणयुक्त शिष्य ! हम अध्यापक लोग तो तेरे लिये (सुवीर्यस्य) जिस पदार्थ से शुद्ध पराक्रम बढ़े, उसके समान (अच्छिन्नस्य) अखण्ड (रायः) योग विद्या से उत्पन्न हुये धन की (पोषस्य) दृढ़ पुष्टि के (ददितारः) देनेवाले (स्याम) हों। जो यह (प्रथमा) पहिली (विश्ववारा) सब ही सुखों को स्वीकार कराने योग्य (संस्कृतिः) विद्या सुशिक्षा जनित नीति है (सा) वह तेरे लिये इस जगत् में सुखदायक हो और हम लोगों में जो (वरुणः) श्रेष्ठ (अग्निः) अग्नि के समान सब विद्याओं से प्रकाशित अध्यापक है (सः) वह (प्रथमः) सबसे प्रथम तेरा (मित्रः) मित्र हो। इस वेद मन्त्र का अर्थ करते हुये इस युग के निर्माता जगद्गुरु महर्षि दयानन्द जी महाराज ने संस्कृति का अर्थ "विद्या सुशिक्षा जनित नीति" किया है। बड़े बड़े विद्वान् बड़ी बड़ी पुस्तकें लिखकर भी संस्कृति का अर्थ स्पष्ट नहीं कर पाते। यहाँ महर्षि जी ने गागर में सागर बन्द

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर दिया। गुरुजन जिस नीति की व्यावहारिक वा क्रियात्मक शिक्षा अपने शिष्यों को विद्या और सुशिक्षा द्वारा देते हैं वह संस्कृति कहलाती है। वही संस्कृति प्रथमा प्रथम कोटि की सर्वश्रेष्ठ है और वही विश्व का कल्याण करने वाली है। विश्व को सभी प्रकार के सुखों को प्राप्त कराने वाली होने से विश्ववारा कहलाती है। यह सारे विश्व के लिये सुखदायक होती है। अतः सभी विश्व के वासी इसका वरण करने के लिये यत्नशील होते हैं। यही संस्कृति "मातृमान् पितृमान् आचार्यवान् पुरुषो वेद" माता पिता और आचार्य इन तीन शिक्षकों के द्वारा अपनी सन्तान वा शिष्यों को विद्या सुशिक्षा द्वारा सिखाई वा पढ़ाई जाती है। १६ (सोलह) संस्कारों का आविष्कार इसी संस्कृति के प्रशिक्षणार्थ किया गया था। विद्या सुशिक्षा अथवा वैदिक संस्कारों द्वारा शिक्षित व्यक्ति ही संस्कृत वा श्रेष्ठ व्यक्ति कहलाता था, उसीको आर्य कहते थे। इस प्रकार श्रेष्ठ व्यक्तियों के आचार व्यवहार को संस्कृति कहते हैं। इसी से सुशील ब्रह्मचारी देव दिव्य गुणों को धारण करने वाला विद्वान् बनता था और वह अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने में समर्थ होकर बलवान् महापराक्रमी विद्या आदि अखण्ड दृढ़ पुष्टिकारक ऐश्वर्य को प्राप्त करता था। जिस से वह अभ्युदय और निःश्रेयस् की सिद्धि करता था, उसके दोनों लोक बन जाते थे। इस संस्कृति की शिक्षा श्रेष्ठ अग्नि के समान सब विद्याओं के प्रकाशक विद्वान् देते थे जो अपने शिष्यों के मित्र के समान परमहितैषी होते थे।

इससे यही सिद्ध हुआ कि ब्रह्मचर्याश्रम में माता पिता और आचार्य तीनों शिक्षक वेद की पवित्र विद्या तथा सुशिक्षा द्वारा राष्ट्र के बालक बालिकाओं को वेद की सर्वश्रेष्ठ (प्रथमा) और विश्ववारा सबको यथार्थ सुख प्राप्त कराने वाली लोक और पर-

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक दोनों को उन्नत करने वाली संस्कृति (सुनीति) का क्रियात्मक पाठ पढ़ाते थे। इसी का नाम वैदिक संस्कृति था। इसी संस्कृति का प्रचार सारे संसार में आदि सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त, ब्रह्मा से लेकर जैमिनि तक, अट्ठासी सहस्र ऋषि महर्षि करते रहे। यही सार्वभौम संस्कृति थी, यही आर्ष संस्कृति आर्य संस्कृति और भारतीय संस्कृति आदि नामों से विख्यात हुई।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी! इस शिखा सूत्र वाली सर्वोच्च चोटी की वैदिक संस्कृति का क्या कहीं थोड़ा बहुत भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में भी प्रचार है?

आचार्य—प्रिय वत्स! विशुद्ध वैदिक संस्कृति का प्रचार बहुत अधिक नहीं है। फिर भी लंका, थाईलैण्ड, सिंगापुर, मलेशिया, ब्रह्मा, जावा, सुमात्रा, बाली द्वीप, अफ्रीका, फिजी, मारीशस ब्रिटिश, गियाना, कैनेडा, हांगकांग, अदन, बगदाद, काबुल (अफगानिस्तान), फारमोसा, जापान आदि सभी देशों में मिला कर कई करोड़ की संख्या में वैदिक संस्कृति को मानने वाले लोग आज भी विद्यमान हैं। यदि उनमें प्रचार किया जाय तो वैदिक संस्कृति के मानने वालों की संख्या और भी बढ़ सकती है और विशुद्ध वैदिक संस्कृति के सच्चे स्वरूप को समझने और मानने वालों की संख्या में बड़ी वृद्धि हो सकती है।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी! क्या अमरीकादि देशों के लोग भी प्रचार से शिखा सूत्र को धारण कर वैदिक संस्कृति के उपासक बन सकते हैं?

आचार्य—प्रिय पुत्र! अवश्य बन सकते हैं, बन भी रहे हैं जैसे अमरीका के डाक्टरों के मतानुसार लम्बी दाढ़ी लम्बी मूंछें और शिर के लम्बे बाल वीर्य को सुरक्षित रखने में सहायक होते हैं। लम्बी शिखा वीर्य रक्षा के लिये परमावश्यक है। प्राचीनकाल में

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये ब्रह्मचारी तथा वानप्रस्थी लम्बी लम्बी दाढ़ी मूंछों वाले जटाधारी होते थे। अथर्व वेद में ब्रह्मचर्य सूक्त में इसी विषय का मन्त्र आता है।

ब्रह्मचार्येति समिधा समिद्धः कार्ष्णं वसानो दीक्षितो दीर्घश्मश्रुः।
स सद्य ऐति पूर्वस्मादुत्तरं समुद्रं लोकान्त्संगृभ्य मुहुराचरिक्रत् ॥

अर्थात् ब्रह्मचारी समिधाधान आदि साधनों द्वारा और शिखा सूत्र मेखला इत्यादि चिन्हों को धारण कर और परिश्रम से विद्या पूर्ण करके ब्रह्मचर्य के अनुष्ठान तप से सब लोगों को सद्गुण और आनन्द से तृप्त कर देता है। विद्या के तेज से प्रकाशित मृगचर्म इत्यादि धारण किये हुये अपनी विद्या को समाप्त करके जब वह दीक्षा लेता है उस समय चालीस वा अड़तालीस वर्ष की आयु में वह बड़ी बड़ी दाढ़ी और मूंछों वाला तेजस्वी ब्रह्मचारी पञ्च केशों को धारण करने से बहुत ही शोभायमान होता है। पूर्व समुद्र रूप ब्रह्मचर्य आश्रम पूरा करके गुरुकुल से उत्तर समुद्र अर्थात् गृहस्थाश्रम अथवा संन्यासाश्रम को शीघ्र प्राप्त होता है। वह अपने सदुपदेश के द्वारा समाज के संगठन को सुदृढ़ और सुन्दर अपने पुरुषार्थ से बनाकर सबको सुखी और आनन्दित कर देता है

वेद की इस सच्चाई को विदेशी विद्वान् भी मानने लगे हैं कि शिखा (चोटी) से ब्रह्मचर्य की रक्षा, बल, आयु और तेज की वृद्धि ही नहीं होती बल्कि–यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। (यजुर्वेद १७।४८)

वेदाज्ञानुसार जब कुमार ब्रह्मचारी विशिष्ट शिखा अर्थात् गाय के खुर के प्रमाण की लम्बी मोटी चोटी दीर्घकाल तक रखते हैं तो उनमें ब्रह्मशक्ति का भी आकर्षण होता है। पाश्चात्य जगत् के सुप्रसिद्ध विज्ञान वेत्ता विकटर ई. क्रोमर (Victor E. Cromir) ने लिखा है—

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

In Meditation on receives the Virllic influce. While Concentrating One: Pours it out. If one however Concentrates ones' mind upon God, there is an out-going and inflowing process set up. The Concentration of mind upon God, There is an out-going and inflowing Process set up, The concentration of mind upon words sends a rush of this force through the top of the head and the response comes as a fine rain of Soft magnatism. These two forces cause a beautiful display of colour to the higher vision. The out-Pouring from alon is beautiful beyend doscription.

(Vril Kalpaka

अर्थात् ध्यान के समय ओज शक्ति प्रकट होती है। किसी वस्तु पर चिन्तन शक्ति एकाग्र करने से ओज शक्ति उसकी ओर दौड़ने लगती है। यदि परमात्मा के ऊपर चित्त एकाग्र किया जाये तो मस्तिष्क के ऊपर शिखा वा चोटी के मार्ग से ओज शक्ति प्रकट होती है वा प्रवेश करती है। परमात्मा की शक्ति इसी मार्ग से मनुष्य के भीतर आया करती है। सूक्ष्म दृष्टि सम्पन्न योगी इन दोनों शक्तियों के सुन्दर रङ्ग को भी देख लेते हैं। जो शक्ति परमात्मा के भीतर आती है उसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

यह मैत्रेयी (६।३४) उपनिषद में आता है—

समाधिनिर्धूतमलस्य चेतसो निवेशितस्यात्मनि यत् सुखं भवेत्।
न शक्यते वर्णियतुं गिरा तदा स्वयन्तदन्तःकरणेन गृह्यते॥

जिस पुरुष के समाधि योग से अविद्यादि मल और क्लेश कष्ट नष्ट हो गये हैं। आत्मस्थ होकर परमात्मा में चित् जिसने लगाया है उसको जो परमात्मा के योग का सुख वा आनन्द की अनुभूति होती है उसे वाणी से कहा नहीं जा सकता। क्योंकि उस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनन्द को जीवात्मा अपने अन्तःकरण से ग्रहण करता है। इस प्रकार आधुनिक विज्ञान से सिद्ध होता है कि शिखा द्वारा ऊपर से शक्ति मिलती है। यही आयु तेज इत्यादि का भी कारण है।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी! आर्यों के संन्यासी शिखा वा चोटी नहीं रखते। फिर उनके लघु मस्तिष्क सुषुम्णा और ज्ञान केन्द्रों की रक्षा कैसे होती है. उनको शिखा के द्वारा जो शक्ति प्राप्त होती है उसका भी ह्रास ही होगा। आयु और तेज की भी वृद्धि नहीं होगी।

आचार्य—प्रिय पुत्र! आप बड़े बुद्धिमान् हो, बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न आपने पूछा है। वेद शास्त्र के अनुसार आयु के तीसरे भाग के पूर्ण होने पर संन्यास लेने का नियम है। वह भी पूर्ण वैराग्य होने पर जब संन्यास लेते हैं लगभग पिचहत्तर ७५ वर्ष की आयु हो जाती है। इस दीर्घकाल में लघु मस्तिष्क सुषुम्णा और ज्ञानकेन्द्र परिपक्व अवस्था में आजाते हैं। संन्यासी शीत और ऊष्ण के सहने मे अभ्यस्त होते हैं। अतः उन्हें चोटी के अभाव में हानि नहीं होती। दूसरे जो संन्यासी ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यास लेते हैं वे तो स्मरण शक्ति के पुञ्ज होते हैं। उनकी आयु तेज आदि में कोई बाधा नहीं पड़ती तथा संन्यासी परमहंस लोग सदैव ब्रह्म में लीन रहते हैं अतः उनको शिखा से भी शक्ति खेंचने की आवश्यकता नहीं पड़ती।

धर्मवीर—आचार्य जी! क्या भारतीय आचार्य भी चोटी से शक्तिसंचय, बल, बुद्धि, आयु और तेज की वृद्धि मानते हैं।

आचार्य—दीर्घायुष्ट्वाय बलाय वर्चसे शिखायै वषट् अर्थात् दीर्घायु बल और तेज के लिये शिखा को स्पर्श करता हूँ। यहां प्रश्न होता है कि बल, आयु और तेज की वृद्धि के साथ चोटी का किस

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रकार से सम्बन्ध है। इस प्रश्न के उत्तरार्थ मानव शरीर रचना पर विचार करना होगा। सम्पूर्ण शारीरिकशक्तियों का केन्द्र हमारा मस्तिष्क है, क्या मानसिक क्या शारीरिक सभी क्रियाकलापों का संचालन उसी के द्वारा होता है। चोटी का स्थान ही काम नाड़ियों का केन्द्र है यदि इस स्थान को उत्तेजित कर दिया जाय वा भड़का दिया जाय तो सभी इन्द्रियों में उत्तेजना उत्पन्न हो जाती है। यदि मस्तिष्क को शान्त स्वस्थ और शक्ति सम्पन्न कर दें तो मनुष्य शान्त और स्वस्थ रहता हुआ वेद की आज्ञानुसार सौ वर्ष वा इससे भी अधिक आयु को प्राप्त कर लेता है। जब किसी को काम सताये तो शिर पर शीतल जल की धारा निरन्तर डाल कर वा शीतल जल के स्नान से शान्त करते हैं। अनुभवी लोगों का कथन है कि मस्तिष्क को शान्त स्वस्थ सबल और शक्ति सम्पन्न बनाने के लिए चोटी रखना एक अमोघ उपाय है।

शिखा के साथ बल, वीर्य, स्वास्थ्य और आध्यात्मिक उन्नति का गहरा सम्बन्ध मानते हैं। इस विषय में हरिवंश में पौराणिक कथा आती है। महर्षि वशिष्ठ का सगर नाम का एक विश्वविजयी क्षत्रिय शिष्य था। पश्चिम देश के राजाओं ने मिलकर उसके पिता को मार डाला। सगर ने अपने पिता का बदला लेने के लिए उन पर आक्रमण किया। वे राजा भय-भीत होकर प्राणरक्षार्थ महर्षि वशिष्ठ की शरण में आये। उनकी प्रार्थना पर महर्षि ने उन राजाओं को अभय दान दिया। किन्तु जब महर्षि को यह ज्ञान हुआ कि उनका विजेता तो उनका अपना प्रिय शिष्य वीरवर सगर है तो दोनों ओर की प्रतिज्ञा रक्षार्थ महर्षि ने आदेश दिया। इन लोगों के प्राण हरण न करो किन्तु इन की शिखा काट लो जिससे ये शक्ति-हीन होकर मृतवत् हो जायेंगे। शिष्य ने ऐसा ही किया और

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोगों को यह देख आश्चर्य हुआ कि वे सभी राजा निर्जीव से और प्रभावशून्य हो गये। इससे यही निष्कर्ष निकला कि चोटी काटने से मनुष्य निस्तेज बल और शक्तिहीन हो जाता है।

यह बात वृक्षों में भी देखने में आती है कि जिस वृक्ष की चोटी काट दी जाय फिर उसके बढ़ने में बड़ा समय लगता है। चतुर व्यक्ति जब कभी आवश्यकता के कारण किसी वृक्ष की शाखायें काटते हैं तो उसकी ऊंची चोटियों को कभी नहीं काटते जिससे वृक्ष की शक्ति तथा वृद्धि को हानि न पहुंचे।

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी! हमारे घरों में जब बालक कुछ पहले सो जाता है तो मातायें बालक को जगाकर दूध पिलाती हैं, बालक निद्रावश दूध पीने का निषेध करता है तो मातायें यह कहकर दूध पिलाती हैं कि पुत्र दूध पी लो तुम्हारी चोटी बढ़ेगी, क्या इस में भी कोई छिपा हुआ रहस्य है?

आचार्य—हां पुत्र! यह भी रहस्यपूर्ण वार्त्ता है। दूध पूर्ण भोजन है शीघ्र पचता तथा सब अंगों को बल और शक्ति प्रदान करता है। बालकों के शरीर मस्तिष्क और बुद्धि की वृद्धि और विकास के लिए सर्वोत्तम भोजन है। चोटी दूध पीने से बढ़ेगी इसका अर्थ हमारा लघु मस्तिष्क शक्तिशाली होकर सभी ज्ञानेन्द्रियों को बल और शक्ति प्राप्त होगी। गीता में "उर्ध्वमूलमधःशाखम्" हमारे मानव शरीर को वृक्ष से उपमा दी है और इसका मूल शिर को माना है तथा नीचे के भागों को शाखा माना है। किसी वृक्ष की यदि जड़ काट दी जाये तो वह नष्ट हो जाता है, सूख जाता है। इसी प्रकार मानव के सिर को काट दिया जाये तो वह भी समाप्त हो जाता है। इसलिए मस्तिष्क की रक्षार्थ चोटी रखना उसे बढ़ाना वा मोटी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रखना आवश्यक है इसी से मस्तिष्क की भी सभी शक्तियां बढ़ती हैं। जैसे यदि किसी के मस्तिष्क में रूक्षता (खुश्की) है तो शिर के बाल गिर जायेंगे और चोटी सबसे पहले काफूर के समान रफोचक्कर हो जायेगी। चोटी न रहने पर मर्म स्थान की रक्षा नहीं होगी। इससे लघु मस्तिष्क आदि को हानि पहुंचेगी और सर्वतोमुखी उन्नति में बाधा पड़ेगी। वेद भगवान् और हमारे कान्तदर्शी महर्षियों ने मर्म स्थान तथा लघु मस्तिष्क सुषुम्णा केन्द्रादि की रक्षा के लिए गोक्षुर के समान चोटी का विधान किया है। ये शिखा शीत काल में शीत से, भीषण ग्रीष्म में उष्णता से और वर्षा में जल वृष्टि के आघात से रक्षा करती है। इसी प्रकार आघात वा चोट लगने से मर्म स्थान और सुषुम्णा केन्द्रादि की रक्षा करती है। दूध पीने से चोटी बढ़ती है और दीर्घ काल तक हमारे मर्म स्थानों की रक्षा करती है। हमारी माताओं की इस बात में पूर्ण सत्य निहित है।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी! यदि शिर पर मर्म स्थान तथा सुषुम्णा केन्द्रादि की रक्षार्थ टोपी पगड़ी उष्णीषादि धारण कर लें और चोटी न रखें तो क्या हानि होगी?

आचार्य—वैज्ञानिक दृष्टि से चोटी के रखने से हैट आदि की अपेक्षा अधिक लाभ होता है और जो हैट टोपी आदि से हानि होती है वह तो शिखा से सर्वथा नहीं होती। संस्कार चन्द्रिका में इस पर अच्छा प्रकाश डाला है। शिखा बालों का एक गुच्छा वा समूह है। बाल ऊन के समान गुण वाले होते हैं। जैसे भेड़ों के बालों वा ऊन में गुण हैं वही गुण मनुष्य के बालों में भी हैं।

(१) परमात्मा ने शीत प्रधान देशों में भेड़ आदि पशुओं की रक्षार्थ लम्बे लम्बे बाल दिये हैं। धनी लोग शीत ऋतु में ऊनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्र धारण करके शीत से बचते हैं । ऊन बाहर के जाड़े को अन्दर नहीं आने देती ।

(२) ऊन बाहर की गर्मी को अन्दर नहीं आने देती जैसे वर्फ की सिल्लियां वा डले ऊनी वस्त्र में ढ़के रहने से पिंघलते नहीं ।

(३.) ऊनी वस्त्र शीघ्र भीगते नहीं इसलिए ऊनी कम्बल भारी वर्षा से बचने के लिए उपयोग में लाए जाते हैं । सूत का धागा वर्षा में शीघ्र गल जाता है ऊन का धागा शीघ्र गलता नहीं ।

(४.) ऊन का तन्तु शरीर के अन्दर की गर्मी को बाहर नहीं आने देता । इसलिए चिड़ियां आदि पक्षी ऊन पर अण्डे देते हैं ।

(५) ऊनी तन्तु को आग बहुत कम लगती है । इसीलिए ऊनी वस्त्र वा धोती पहनने वाले पाचक (रसोइये) अग्नि लगने पर जलने से बच जाते हैं । यदि ऊन के तन्तु को जलाओ तो थोड़ी दूर जलकर स्वयं बुझ जाएगा । इसीलिए जलने से भी ऊन रक्षा करती है ।

(६.) ऊन विद्युत् के प्रभाव को अन्दर से बाहर और बाहर से अन्दर नहीं आने देती इसलिए विद्युत् तार वा विद्युत् यन्त्रो में ऊन रेशम की बहुत खफत है । ऊपर लिखित जो गुण ऊन में हैं वही छः गुण ईश्वर ने हमारे बालों में रक्खे हैं । सिर के बाल तथा शिखा वा चोटी उक्त छः प्रकार के गुणों से युक्त होकर सिर की रक्षा करती है । ऊपर्युक्त गुण हैट, टोपी, पगड़ी में नहीं होते ।

धर्मवीर—पूज्य आचार्य जी ! पहले तो सब जटी अर्थात् जटाधारी होते थे तो उस समय चोटी कोई नहीं रखता होगा ।

आचार्य—पुत्र ऐसी बात नहीं हैं । दण्डी जटी मेखली शिखा जटो वा स्यात् (संस्काररत्नमाला ब्रह्मचारी धर्म)

दण्डी— दण्ड धारण करने वाला, जटी—जटा धारण करने

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला, मेखली—मेखला धारण करने वाला अथवा शिखाजट—केवल जटा के स्थान पर शिखा ही रखता था, जटा नहीं अर्थात् चोटी को ही अपनी जटा मानकर धारण करता था। "शिखैव जटा यस्य सोऽयं शिखाजटः शिखामेव धारयेत् इतरान् केशान् वापयेत्" शिखा को ही रखकर शेष सब बालों को कटवा देते थे। यही विधान था। जो सारी जटा अर्थात् सिर के सब बाल रखना चाहता था वह सब रख सकता था। किन्तु जटा रखना कोई आवश्यक नहीं था किन्तु शिखा अनिवार्य रूप से धारण करते थे।

गौतम प्रणीत धर्मसूत्र में लिखा है—मुण्डजटिलशिखा-जटाश्च ॥२६॥

मुण्ड जो सभी केशों को कटा लेते थे। जटिल जो सब केशों को धारण करते थे। शिखाजटः जो शिखा को ही जटा मानकर धारण करते थे। यह सामान्य धर्म था। सारे बालों को कटवाने वाले संन्यासी होते थे।

मुण्डः शिखी वा ॥२१॥

मुण्ड सब बालों को कटवा देते थे। शिखी जो शिखा को रख-कर अन्य सब बालों को कटवा देते थे।

सशिखं वपनं कृत्वा बहिःसूत्रं त्येजद्बुधः।
एकदण्डं गृहीत्वा च भिक्षुधर्मं समाचरेत् ॥

संन्यासी शिखा सहित सब केशों को कटवा देते थे और मुण्डरूप में रहते थे। यज्ञोपवीत का भी त्याग कर देते थे। केवल एक दण्ड लेकर भिक्षु धर्म संन्यास धर्म का पालन करते थे अर्थात् संन्यासी के अतिरिक्त सभी शिखा वा जटा धारण करते थे। जटा वा शिखा का विकल्प था। क्योंकि जटा रखने पर शिखा तो उसके मध्य में ही आजाती है किन्तु शिखा संन्यासी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के अतिरिक्त सभी रखते थे। केवल संन्यासी जिसे भिक्षु भी कहते हैं चोटी सहित सब बाल कटवा देते थे। वे मुण्ड ही रहते थे।

निबद्धशिख आसीनो द्विज आचमनं चरेत्।
कृत्वोपवीतं सव्येऽसे वाङ्मनःकायसंयतः॥

भावार्थ यही है कि शिखा बान्धकर तथा यज्ञोपवीत धारण किये हुए द्विज आचमन सन्ध्योपासना आदि नित्यकर्म करे। बिना शिखा के बांधे और बिना यज्ञोपवीत के कोई नित्यकर्म नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द जी पञ्चमहायज्ञविधि में लिखते हैं—इसके पश्चात् गायत्री मन्त्र से शिखा को बांधकर रक्षा करे, इसका प्रयोजन यह है कि इधर उधर केश न गिरें। रक्षा करने का प्रयोजन परमेश्वर प्रार्थित होकर सब भले कामों में सदा सब स्थानों में हमारी रक्षा करें।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी! क्या स्त्रियों को भी चोटी रखनी चाहिए।

आचार्य—पुत्र! बड़ा अच्छा प्रश्न पूछा। स्त्रियों के विषय में लिखा है "स्त्रीणां केशधारणमेव शिखाधारणम्"। स्त्रियों का केश रखना ही शिखा धारण करना है। प्रायः सारे संसार में देवियां केश धारण करती हैं। अतः इस शास्त्राज्ञानुसार तो संसार की सभी स्त्रियां शिखाधारी हैं। अर्थात् संसार में शिखा धारण करने वालों की संख्या सबसे अधिक हुई। ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध, पारसी, यहूदी सभी मतों को मानने वालों की स्त्रियां भी शिरों पर केश रखती हैं। "जटिलो वा" इस शास्त्र वचन का पालन प्रायः सभी संसार की देवियां करती हैं। इस प्रकार शिखा न रखने वालों की अपेक्षा शिखा रखने वालों की संख्या अधिक है। 'विशिखो' शिखा व चोटी न रखनेवालों की संख्या न्यून है।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी ! जो मुस्लिम, ईसाई पुरुष शिखा नहीं रखते उनकी क्या हानि होती है। कुछ दिखाई तो नहीं देती।

आचार्य—प्रिय वत्स ! उनकी हानि होती है। जैसे मुसलमानों की स्मरण शक्ति उन दक्षिणात्य पण्डितों की स्मरण शक्ति से बहुत कम होती है, जो शास्त्र के अनुसार चोटी रखते हैं। सरकार की १९१० की रिपोर्ट पढ़कर देखिये कि वह अपनी रिपोर्ट में स्मरण शक्ति के लिये भारत की सभी जातियों में किस प्रान्त के किन जाति वालों को स्मरण शक्ति में सबसे बड़ा मानती है। दक्षिण में आपको बहुत पंडित मिल जायेंगे जिनमें बहुतों को आद्योपान्त एक वेद, दो वेद, तीन वेद और चारों वेद तक सस्वर कण्ठस्थ होते हैं। एक बार महाराष्ट्र में लिङ्गायतों को मुसलमान बनाने के लिये मुस्लिम उपदेशक सद्दीकदीनदार ने यह घोषणा की कि मैं लिङ्गायतों का अवतार हूं। लोग उसके चक्कर में फंस कर मुस्लिम मत को स्वीकार करने लगे। इसके प्रतीकार के लिये आर्यसमाज के पंडितों ने उसको शास्त्रार्थ के लिये ललकारा। शास्त्रार्थ हुआ। उसमें आर्यसमाज के पडितों ने उसके सन्मुख पाणिनीय अष्टाध्यायी रख दी, और कहा आप अवतार तो हैं ही आप इस पुस्तक को आद्योपान्त कंठस्थ करके एक दो मास में सुना देवें। वह उसे छः मास १ वर्ष में भी कंठस्थ करके नहीं सुना सकता था। वह अपनी हार मानकर मैदान छोड़कर भाग खडा हुआ। जबकि भारत में सैंकड़ों नहीं सहस्रों ऐसे व्यक्ति आर्य जाति में मिल जायेंगे जिनको सारी अष्टाध्यायी कंठस्थ है। पूना में मैंने एक ८० वर्ष से अधिक आयु के पंडित के दर्शन किये, जिसे सारा ऋग्वेद, सम्पूर्ण गीता और विष्णुसहस्रनाम आदि अनेक ग्रन्थ आरम्भ से अन्त तक स्मरण थे। उसकी अनेक प्रकार से पंडितों

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने परीक्षा ली किन्तु उसने अपनी स्मरण शक्ति से सभी लोगों को आश्चर्य चकित कर दिया। ऐसे मोटी मोटी शिखाधारी शास्त्रों को कंठस्थ रखने वाले पंडित बहुत संख्या में आज भी दक्षिणभारत में विद्यमान हैं। मुसलमानों में पागल, अन्धे, मस्तिष्क सम्बन्धी रोगी इन्हीं कारणों से आर्यों की अपेक्षा अधिक संख्या में मिलते हैं। अतः सबको चोटी रखनी चाहिये।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी! यदि सारे शिर पर ही बाल रख लिये जावें तो क्या हानि है?

आचार्य—प्रिय पुत्र! शीत देशों में तथा शीतकाल में कोई सारे शिर पर बाल रख ले तो हानि नहीं किन्तु ग्रीष्म काल में और गर्म देशों में सारे शिर पर बाल रखने से गर्मी अधिक होने के कारण अनेक प्रकार की हानियां होंगी और स्मरण शक्ति का ह्रास हो जायेगा। अतः गर्मी में अथवा गर्म प्रदेशों में शिखा रखकर सब बाल मुण्डवा देने चाहियें। शीतकाल वा शीतप्रधान देशों में सब रखे जा सकते हैं। कुछ विद्वानों का ऐसा मत भी है कि ऐसा करने से हानि होती है। उनका कथन है गर्मियों में बाल कटवाने से लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र विकृत (खराब) हो जायेंगे। क्योंकि ऐसा करने से शीत और ऊष्णता सहने की शक्ति नहीं रहेगी जिस से हानि होगी। किन्तु इस में मतभेद है। बाल तो शरीर का मल है। इसे रखने से हानि हो तो तुरन्त कटवादें। किन्तु चोटी कभी न कटवायें।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी! आपने बताया कि चोटी कभी नहीं कटवायें किन्तु महर्षि दयानन्द ने तो गर्म देशों में चोटी कटवाना लिखा है। हमने यह सुना है।

आचार्य—प्रिय पुत्र! महर्षि दयानन्द जी ने अपने अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में इस प्रकार लिखा है। "मनु जी महाराज का

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न म्न श्लोक लिखकर इसकी व्याख्या की है।

केशान्तः षोडशे वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते।
राजन्यबन्धोर्द्वाविंशे वश्यस्य द्व्यधिके ततः॥

मनु० अ० २ श्लोक १२।

अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय के बाईसवें और वैश्य के चौबीसवें वर्ष में केशान्त कर्म और क्षोर मुण्डन हो जाने चाहियें अर्थात् इस विधि के पश्चात् केवल शिखा को रख करके अन्य दाढ़ी मूंछ और शिर के बाल सदा मुण्डवाते रहना चाहिये। अर्थात् पुनः कभी न रखना और जो शीत प्रधान देश हो तो कामाचार है, चाहे कितने केश रखे और जो अति उष्ण देश हो तो सब शिखा सहित छेदन करा देना चाहिये। क्योंकि शिर में बाल रहने से उष्णता अधिक रहती है और उससे बुद्धि कम हो जाती है। दाढ़ी मूंछ रखने से भोजन पान अच्छी प्रकार नहीं होता और उच्छिष्ट भी बालों में रह जाता है।

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी! क्या भारत में कोई ऐसा उष्ण प्रदेश है जहां चोटी कटवा देनी चाहिये?

आचार्य—नहीं पुत्र! भारत क्या एशिया महाद्वीप में भी कोई ऐसा स्थान नहीं हो सकता जहां चोटी कटवानी पड़े। संभव है अरब देशों में कोई ऐसा स्थान हो जहां कि इतनी उष्णता हो। अफ्रीका महाद्वीप बहुत उष्णता प्रधान है। वहां पर मरुभूमि वा इसी प्रकार अन्य मरुस्थलों में कोई अत्यन्त उष्ण प्रदेश हो सकता है जहां पर शिखा छेदन की छूट हो सकती है। भारत आदि देशों में कभी भी किसी अवस्था में भी चोटी नहीं कटवानी चाहिये। इससे यही सिद्ध होता है कि भारत आदि देशों में आबाल युवा वृद्ध सबको गोक्षुर के समान चोटी रखनी

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहिये। केवल संन्यासी को छूट है कि वह चोटी न रखे।

सोमवीर—आचार्य जी! क्या शिखा शारीरिक उन्नति में भी सहायक है इस पर अच्छा प्रकाश डालने की कृपा करें।

आचार्य—प्रिय पुत्र! ध्यान से सुनें। हमारे शास्त्रों में भी इस पर अच्छा प्रकाश डाला है।

"अन्तरेण तालुके य एष स्तन इव अवलम्बते, स इन्द्रयोनिः यत्र असौ केशान्तो विवर्तते व्यपोह्य शीर्षकपाले" ॥

(तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षावल्ली) ६।२)

मनुष्य के मुख में तालु के मध्य में जो एक स्तन के आकार का मांसपिण्ड लटकता है, उसके आगे केशों का मूलस्थान ब्रह्मरन्ध्र है। वहां शिर के दोनों कपालों का भेदन करके निकली हुई सुषुम्णा नाड़ी है, वह इन्द्रयोनि परमात्मा की प्राप्ति का द्वार है। वैद्य लोग ब्रह्मरन्ध्र को मस्तिष्क तथा सुषुम्णा के मूलस्थान को मस्तुलिङ्ग कहते हैं। जिस प्रकार मस्तिष्क ज्ञानशक्ति का भण्डार है उसी प्रकार मस्तुलिङ्ग कर्मशक्ति का कोष है। इसलिए दोनों शक्तियों के स्थान शिर में होने से यह मनुष्य की जीवन शक्ति का केन्द्र ठहरा। इन दोनों में से मस्तिष्क का वर्णन पहले कर चुके हैं। मस्तुलिङ्ग के साथ कर्मेन्द्रियां, वाणी हाथ पैर गुदा उपस्थेन्द्रिय का सम्बन्ध है। मस्तुलिङ्ग जितना बलवान् होगा कर्मेन्द्रियां उतनी ही शक्ति और बलसम्पन्न होंगी। भेद यह है कि मस्तिष्क ठण्ड चाहता है जैसे कहा भी है—"पैर गर्म पेट नर्म, शिर ठण्डा, आये वैद्य तो में मारो दण्डा" किन्तु इसके विपरीत मस्तुलिङ्ग गर्मी चाहता है। अतः मस्तिष्क को ठण्ड प्रधान करने के लिए क्षौर कराना बाल कटवाना आवश्यक है और मस्तुलिङ्ग को गर्मी पहुंचाने के लिये गोक्षुर परिमाण की चोटी आवश्यक है। इस प्रकार मस्तुलिङ्ग को यथोचित

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊष्मा (गर्मी) चाहिये जो न न्यून हो वा न अधिक हो - मध्यम चाहिये। यह यथोचित ऊष्मा पगड़ी, टोपी से नहीं आ सकती। यह तो शिखा के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है। क्योंकि शिखा से उत्पन्न होने वाली गर्मी इसकी वास्तविक सहायता करती है। जिस प्रकार मिट्टी से बने घड़े के प्रत्येक अङ्ग की पूर्ति वा निर्माण मिट्टी के द्वारा होता है। उसी प्रकार शिर के भाग मस्तुलिङ्ग की रक्षा भी शिर में उत्पन्न होने वाले केश ही करेंगे, टोप टोपी पगड़ी नहीं। अतः सबको चोटी रखनी चाहिये।

कुछ विद्वानों का यह मत है कि शिर का जो सबसे ऊंचे स्थान जहां पर चोटी रखी जाती है उस के नीचे मर्मस्थल माना गया है जिसे पीनियल ग्लैण्ड (Pineal Gland) कहते हैं। इसके नीचे एक विशेष प्रकार की ग्रन्थि होती है जिसे पिचुट्री (Pituetry) कहते हैं। इस ग्रन्थि से एक रस बनता है जो नाड़ियों द्वारा सारे शरीर में व्याप्त होकर शरीर को हृष्ट-पुष्ट एवं बलशाली बनाता है। शिखा द्वारा इन ग्रन्थियों का अपना कार्य करने में बड़ी सहायता मिलती है और वे दीर्घ काल तक अपना कार्य करती रहती हैं। इससे मनुष्य दीर्घकाल तक स्वस्थ रहकर अपनी दीर्घ आयु प्राप्त कर सुखी रहता है और उसकी ज्ञानशक्ति भी अक्षुण्ण बनी रहती है।

कृष्णकुमार—पूज्य आचार्य जी ! क्या चोटी से प्राण शक्ति की भी वृद्धि होती है ?

आचार्य—माननीय अध्यापक जी ! चोटी का स्थान वृक्ष की ऊंची चोटियों टेपरूट (Tape Root) के समान है और चोटी के बाल टेपरूट बालों के समान हैं। जैसे टेपरूट के बाल (तन्तु) पृथ्वी के भीतर से पानी खेंचते हैं उसी प्रकार चोटी के बाल वायु से आक्सीजन (Oxygen) प्राण शक्ति खेंचते हैं। जिस प्रकार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टेपरूट से ऊपर के बाल अन्दर से खोखले होते हैं उसी प्रकार मनुष्य के बाल भी अन्दर से पोले होते हैं। जिस प्रकार टेपरूट के ऊपर के बाल छील डालने से वृक्ष पानी नहीं खींच सकता इसी प्रकार चोटी के बाल काट डालने से मस्तिष्क प्राणवायु नहीं खींच सकता। अतः चोटी रखना प्रत्येक व्यक्ति के लिये आवश्यक है चाहे वह मुसलमान वा ईसाई ही क्यों न हो। जिसने अपने शिर पर घुप्पेदार चोटी रखी हुई है उसने अपने शिर पर प्राणवायु खींचने वाला पम्प लगाया हुआ है। वह व्यक्ति प्रकृति की सूक्ष्म से सूक्ष्म शक्तियों को प्राप्त कर लेता है। गम्भीर प्रश्नों का उत्तर दे सकता है उलझी हुई समस्याओं को सुलझा सकता है और योगाभ्यास करने की योग्यता प्राप्त कर लेता है। जिस प्रकार जंगल के पशु जो कभी वस्त्र नहीं पहनते वे कभी रुग्ण नहीं होते बल्कि स्वस्थ और हृष्ट पुष्ट रहते हैं। कारण यही है उनके शरीर के बाल खुले रहते हैं और वे ठीक रूप में प्राणवायु खेंचते रहते हैं।

सोमवीर—पूज्य आचार्य जी! फिर लम्बी लम्बी जटायें रखने से चोटी की अपेक्षा अधिक लाभ होगा वे प्राणवायु को अधिक ग्रहण करेंगी।

आचार्य—इस विषय में हमने पहले भी थोड़ी चर्चा की थी। लम्बी लम्बी जटायें मूंछ दाढी भी बल और शक्तिवर्धक है। लम्बी जटायें जो बैठने पर भूमि में टिक जाती हैं उनमें विशेष आकर्षण होता है क्योंकि पृथिवी से मस्तिष्क का विशेष सम्बन्ध जटाओं के द्वारा हो जाने से ये पृथिवी से स्पर्श करनेवाली जटायें पृथिवी की शक्तियां मस्तिष्क में पहुंचने लगती हैं जिससे विशेष सुख वा शक्ति प्राप्त होती है।

ओ३म् भूः पुनातु शिरसि के अनुसार पृथिवी हमारे शिर को पवित्र करती है। इससे सिद्ध होता है कि चोटी के द्वारा वा जटाओं

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पृथिवी की सब शक्तियों को अपने शरीर में खेंचते हैं। जटायें गर्मी और गर्म देशों में हानि करेंगी किन्तु चोटी रखने से किसी भी देश वा ऋतु में हानि नहीं होती। अतः सब काल तथा देशों में चोटी रखा करें इससे लाभ ही लाभ है।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी! क्या चोटी ब्रह्मचर्य पालन में प्रत्यक्ष रूप से भी सहायक है?

आचार्य—प्रिय वत्स! जब बालक की "आषोडशाद् वृद्धि" १६ वर्ष से वृद्धि अवस्था आरम्भ होती है। अङ्ग प्रत्यङ्ग धातु उपधातु बल शक्ति ओज कद आदि सब बढ़ते हैं। पुरुष की शक्ति विकास की सूचना मुख छाती आदि स्थानों पर उगने वाले मूंछ दाढी छाती के केश वा बाल देते हैं। परन्तु स्त्री के यौन वा युवावस्था के विकास का पता केशों से नहीं मासिक ऋतुधर्म स्तनों में दूध और जरायु की वृद्धि द्वारा होता है। जब युवावस्था के साथ केश निर्गम का सम्बन्ध है तो जिस प्रकार किसी वृक्ष की शाखा काटने से उसमें बड़े वेग के साथ नवीन शाखा निकलती हैं इसी प्रकार प्रतिदिन केश काटते रहने से यौन (कामवासना) का वेग भीतरी कामशक्ति के रूप में स्नायुवों में अधिक प्रकट होता है। जिसके फलस्वरूप वीर्य स्खलित होकर ब्रह्मचर्य नष्ट हो जाता है और क्षीणता को प्राप्त होता है। इसलिये ब्रह्मचारियों के लिये क्षौरकर्म (हजामत करना) बाल कटवाना निषिद्ध है, वर्जित है। "क्षुरकृत्यं वर्जय" क्षौर मत कर। महर्षि दयानन्द जी ने जो इस युग के आदर्श ब्रह्मचारी थे संस्कार विधि में केश कटवाने का स्पष्ट निषेध किया है। केशों के कारण काम सम्बन्धी नसों का वेग दबा रहता है और वीर्य के नष्ट होने की उत्तेजना नहीं होती। शिखा रखने के कारण ही आर्यों में बल, आयु, तेज, ब्रह्मचर्य, मेधा

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आत्मचिन्तन और संयम की अधिकता है। इसके विपरीत चोटी न रखनेवाली जातियों में उच्छृङ्खलता, कामुकता और विलासितादि दुर्गुण होते हैं। शिखा के प्रति आस्था घटने के कारण अब आर्यों में भी उपर्युक्त गुण घटते जा रहे हैं और दुर्गुण बढ़ रहे हैं।

धर्मवीर—पूज्य आचार्य जी! जब चोटी इतनी लाभदायक है तो फिर भी आज आर्यावर्त में आर्यों की सन्तान चोटी और यज्ञोपवीत रखने में अपनी मान हानि समझती है। यह ऋषि महर्षियों की सन्तान की आज ऐसी दुर्गुति क्यों हो रही है?

आचार्य—प्रिय वत्स! इन सब दुर्गुणों का एकमात्र कारण दूषित पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली है जो लार्ड मैकाले ने भारत के सर्वनाश के लिये भारत में चालू की थी। उसने १८३५ ई० में कहा था "English education would train up a class of persons, Indian in blood and colour but English in tastes in morals and in intellect."

अर्थात् अंग्रेजी शिक्षा द्वारा मनुष्यों का एक ऐसा दल तैयार होगा जो रक्त और रंग में तो भारतीय होगा किन्तु आचार विचार खानपान और रहन सहन में बिल्कुल अंग्रेज होगा। जिसे काला अंग्रेज कहना चाहिए।

लार्ड मैकाले को अपने जीवन में ही सफलता मिल गई उसने १८३६ में अपने पिता को एक पत्र लिखा—

"The effect of this education on Hindu is prodigious. No Hindu who has recewed an English education ever remains sincerly attached to his religion some continue to profers themselves, Pure deists and some embrace christianity. It is my firm belief that if our planes of education

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
are followed up, there will not be a single Idolater among the respectable class in Bengal thirty years hence."

अर्थात् इस शिक्षा का हिन्दुओं पर आश्चर्यजनक प्रभाव हो रहा है। जिस हिन्दु को यह शिक्षा मिली है वह हार्दिक भाव से अपने धर्म का उपासक वा प्रेमी नहीं रहा। कई नीति की दृष्टि से हिन्दु बने रहते हैं और कई ईसाई धर्म को स्वीकार कर लेते हैं। मेरा सुदृढ़ विश्वास है कि यदि मेरे निर्दिष्ट मार्गानुसार यही शिक्षा चलती रही तो तीस वर्ष के भीतर ही भीतर बंगाल में पढ़ा लिखा लोग कोई भी मूर्तिपूजक वा हिन्दू नहीं रहेगा। लार्ड मैकाले की शिक्षापद्धति के फलस्वरूप आज शिक्षित वर्ग योरोप की सभ्यता का दास बन चुका है। न इनके शिर पर चोटी रहती न गले में जनेऊ। सारे युवक फैशन के दास बनकर जो कर रहे हैं उसके विषय में किसी ने ठीक ही लिखा है:—

बाबूभ्यो धर्महीनेभ्यः स्थित्वा मूत्रविसर्जिभ्यः।
भीतं सूत्रं गतं भूमौ शिखा भीता दिवं गता॥

धर्महीन तथा खड़े होकर पेशाव करने वाले बाबुवों से डरकर जनेऊ पाताल (भूमि) में पहुच गया और शिखा आकाश में चली गई। कितने दुःख की बात है कि जिस शिखा सूत्र (चोटी जनेऊ) की रक्षार्थ महाराणा प्रताप और वीर शिवाजी ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी, वीर हकीकत जैसे हजारों बालक जिस चोटी जनेऊ के लिये शहीद हो गये, महर्षि दयानन्द ने जिस चोटी जनेऊ की रक्षार्थ १६ बार विष के प्याले पीये, आजकल के बाबू उस शिखा सूत्र को स्वयं काट कर फैंक रहे हैं। अपनी संस्कृति पर अपने हाथों आप कुठाराघात कर रहे हैं। इसकी एकमात्र चिकित्सा है "प्राचीन वेद शिक्षा प्रणाली, ऋषि शिक्षा प्रणाली जिसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली कहते हैं।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यवीर—पूज्य आचार्य जी ! यह तो प्रत्यक्ष है कि गुरुकुल की शिक्षा से ही संसार का कल्याण होगा। जब हम अपनी आंख से देख रहे हैं कि यहां के ब्रह्मचारी कितने स्वस्थ, सुन्दर, सुदृढ़, सुगठित और बलिष्ठ शरीर वाले हैं। सारे शरीर पर कान्ति मुख पर ब्रह्मचर्य का तेज और इनकी आंखों में दिव्य ज्योति है। इनके शिर में मोटी मोटी चोटियां, गले में यज्ञोपवीत कितने सुन्दर लगते हैं। हम सब विद्यार्थी जो स्कूल से आज यहां सत्सङ्ग में आए हैं, इन पवित्र ब्रह्मचारियों के दर्शन कर और आपके उपदेशामृत का पान कर कृतकृत्य हो गये हैं। कितना अच्छा होता हम भी बाल्य-काल में इस पवित्र गुरुकुल में प्रविष्ट हो आपके चरणों में रहकर सच्ची शिक्षा पाकर अपना जीवन सफल करते।

धर्मवीर—यह तो हम सबने निश्चय कर लिया है कि हम ब्रह्मचारियों के समान गोक्षुर जितनी मोटी मोटी शिखा रखेंगे और आपके पवित्र कर-कमलों द्वारा पूज्य आचार्य जी यज्ञोपवीत धारण करेंगे। जब जब अवसर मिलेगा गुरुकुल में तथा बाहर भी इस प्रकार के वैदिक सत्सङ्ग से पूर्ण लाभ उठायेंगे।

राजवीर—पूज्य आचार्य जी ! मेरे अन्य साथी तो बड़ी आयु के हैं किन्तु मेरी आयु तो अभी गुरुकुल में प्रवेश के योग्य है मुझे तो अपने चरणों में रखकर एक आदर्श ब्रह्मचारी बनाने की कृपा करें।

सोमवीर—वैसे तो हम सब यहाँ आकर इतने प्रभावित हुये हैं कि हम में से कोई भी घर लौट कर नहीं जाना चाहता। सब यहीं गुरुकुल में ही प्रविष्ट होकर यहां की पवित्र शिक्षा से शिक्षित और दीक्षित हो अपना जीवन सफल करना चाहते हैं। किन्तु हमारी बड़ी आयु, हमारे माता पिता की स्वार्थी मनोवृत्ति यहां प्रविष्ट होने में बड़ी भारी बाधा है। हमारे गुरु पूज्य कृष्णकुमार

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जी भी बड़े अच्छे आचार के आर्यसमाजी आदर्श अध्यापक हैं। इनके पिता जी भी आर्यसमाज के अच्छे उपदेशक हैं। उनकी कृपा से हमारे अध्यापक श्री कृष्णकुमार जी कुछ समय गुरुकुल में पढ़ते रहे हैं। इन्हीं की कृपा से हमने आज सच्चे देवस्थान गुरुकुल और पवित्र ब्रह्मचारियों के दर्शन किये और आप समान महान् आचार्य के दर्शन करके आज हम सब सफल मनोरथ हो गये। आपके उपदेशामृत ने तो हमारे जीवन की काया ही पलट डाली। हम आपके आयु भर ऋणी रहेंगे।

अपने अध्यापक कृष्णकुमार सहित सब ही विद्यार्थी आचार्य जी के पादस्पर्श कर नमस्ते करके चले जाते हैं यज्ञप्रसाद बांटा जाता है उसको सब क्रमशः ग्रहण करते हैं और अपने अपने घर चले जाते हैं। आज का श्रावणी उपाकर्म शान्तिपाठ और वैदिक धर्म का जय, महर्षि दयानन्द का जय आदि जय घोषों के साथ समाप्त होता है।





CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

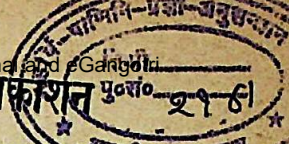
स्वामी ओमानन्द जी की रचनायें

१. बलिदान (सचित्र)	१२.००
२. शेरशाह सूरी	.७५
३. वीर हेमू	.७५
४. मांस मनुष्य का भोजन नहीं	१.००
५. ब्रह्मचर्यामृत	.२०
६. बाल विवाह से हानियां	.१०
७. स्वप्नदोष चिकित्सा	.२०
८. बिच्छू विष चिकित्सा	.२०
९. पापों की जड़ (शराब)	.२०
१०. हमारा शत्रु (तम्बाकू)	.२०
११. नेत्र रक्षा	.२५
१२. व्यायाम का महत्त्व	.२५
१३. राम राज्य कैसे हो	.२०
१४. हरयाणा के वीर यौधेय	७.००
१५. ब्रह्मचर्य के साधन १—२ भाग	.१०
१६. „ „ ३ भाग (दन्त रक्षा)	.२०
१७. ब्रह्मचर्य के साधन ४ भाग (व्यायाम सन्देश)	१.००
१८. „ ५ „ (स्नान, संध्या, यज्ञ)	.४०
१९. „ ६ „ (प्राणायाम)	१.००
२०. „ ७, ८ „ (सत्संग, स्वाध्याय)	.५०
२१. „ ९ „ (भोजन)	.७०
२२. ब्रह्मचर्य के साधन १० भाग (निद्रा)	.५०
२३. ब्रह्मचारी की मेखला (११ भाग)	.६०
२४. रूस में १५ दिन	.५०
२५. हरयाणा का संक्षिप्त इतिहास	.५०
२६. वीरभूमि हरयाणा	४.००
२७. मेरी विदेश यात्रा	.७५
२८. जापान यात्रा	.७५
२९. शराब से सर्वनाश	.५०

प्रकाशक— हरयाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर । दूरभाष ४४

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri



हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	प्रदीप-उद्द्योत-विमर्श सहितं व्याकरणमहाभाष्यम्	८०.००	
२.	छन्दःशास्त्रम्	२.००	
३.	काव्यालंकारसूत्राणि	१.२५	
४.	कारिकाप्रकाश	१.२५	
५.	दयानन्दलहरी	१.२५	
६.	ब्रह्मचर्यामृतम्	.५०	
७.	विरजानन्द चरितम्	१-००	
८.	नारायणस्वामिचरितम्	.७५	
९.	ब्रह्मचर्यशतकम्	.६५	
१०.	गुरुकुलशतकम्	.५०	
११.	ब्रह्मचर्यमहत्त्वम्	.५०	
१२.	चारुचरितामृतम्	१.००	
१३.	भारतेतिहासः	३.००	
१४.	तत्त्वबोध	१.००	
१५.	लिङ्गानुशासनवृत्तिः	१.२५	
१६.	स्थावर जीव मीमांसा	२.००	
१७.	विरजानन्दचरित (हिन्दी)	१.५०	
१८.	वैदिक धर्म परिचय	.६५	
१९.	छात्रोपयोगी विचारमाला	.६५	
२०.	महर्षि दयानन्द जीवन कथा (भजन)	.७५	
२१.	असली अमृतगीता १ भाग	.४०	
२२.	असली अमृतगीता २ भाग	.३०	
२३.	बस्तीराम रहस्य	.३०	
२४.	मानस दोषिका	१.००	
२५.	पोप की नाक्कर	.३०	
२६.	पाखण्ड खंडनी	१ ५०	
२७.	बस्तीराम अग्निबाण	१.००	
२८.	वैदिक भारत में यज्ञ	२.००	
२९.	दो महात्मा (ईसा, दयानन्द)	१.००	
३०.	माया का खेल	२.५०	
३१.	सामयिक समाधान	.५०	
३२.	बाल शिक्षा	.२०	
३३.	मनोविज्ञान शिव संकल्प	३.५०	
३४.	वेद प्रवेश (१-२ खण्ड)	२.५०	
३५.	आर्य सामाजिक धर्म	.७५	
३६.	फिट् सूत्र प्रदीप	१ ००	
३७.	महर्षि दयानन्द जीवन	२.२५	
३८.	वेद विमर्श (प्रथम भाग)	२.००	
३९.	आसनों के व्यायाम	१.००	
४०.	सुखी जीवन	२.००	
४१.	घर का वैद्य (दोनों भाग)	२ ००	
४२.	रामप्रसाद बिस्मिल	.७५	
४३.	ईशोपनिषद् व्याख्या	.७५	
४४.	संस्कृत प्रबोध	१.५०	
४५.	एक सत्पुरुष की दिनचर्या	१.२५	
४६.	गीत कुसुमाञ्जलि	.७५	
४७.	जीव का परिमाण	.७५	
४८.	कन्या और ब्रह्मचर्य	२०	

प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान, पो० गुरुकुल झज्जर, रोहतक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेदविषयक अपूर्व ग्रंथ—

वेद-विमर्श

(ले० वेदव्रत शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि)

इस ग्रन्थ में १ वेदसंज्ञा, २ वेदशाखा, ३ वेदत्रयी, ४ वेद क्यों पढ़, ५ वेदाध्ययन का अधिकार, ६ वेद की सात मर्यादा, ७ वेद की ऋषिपरम्परा, ८ वेद समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूलस्रोत, ९ वेद में गोपालन, १० वेद में कृषिविद्या, ११ वेद में प्रश्नोत्तर-विद्या, १२ वेद में आयुर्वेद, इन बारह विषयों पर शास्त्रीय दृष्टि से गहन चिन्तन किया गया है।

इस ग्रन्थ की डा० हरिदत्त शास्त्री, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, सुरेशचन्द्र वेदालंकार, पं० सत्यदेव वासिष्ठ, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री इत्यादि वैदिक विद्वानों ने भूरी-भूरी प्रशंसा की है।

२०×३०=१६ साइज में बढिया कागज पर छपे २३० पृष्ठ के ग्रन्थ का मूल्य २ रुपये मात्र है।

पातञ्जलं व्याकरण-महाभाष्यम्

(प्रदीप-उद्द्योत टीका एवं विमर्श टिप्पणी सहित)
सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री व्याकरणाचार्य

यह संस्करण आज तक छपे सभी संस्करणों से शुद्ध और सुन्दर है। प्रदीप उद्द्योत टीका तथा विमर्श टिप्पणी सहित २०×२६=८ आकार में ३६२४ पृष्ठों के पांच भागों में सम्पूर्ण महाभाष्य सुलभ है। मूल्य १६ रुपये प्रतिभाग। सम्पूर्ण ग्रन्थ का मूल्य ८० रुपये है।

प्रकाशक—हरयाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, जि० रोहतक

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे नये प्रकाशन

तिथी... पुस्तक० 2981 ... पुस्तकालय

१—हमारा फाजिलका

[लेखक—योगेन्द्रपाल पत्रकार]

अबोहर फाजिलका कब बसा ? किसने बसाया ? वहां के निवासी कौन हैं ? उनका खान पान, वेश भूषा और भाषा क्या है ? उनके धार्मिक तथा सामाजिक रीति रिवाज कैसे हैं ? इत्यादि विस्तार पूर्वक सप्रमाण इस पुस्तक में पढ़िये। मूल्य १-५०

२—आसनों के व्यायाम

[ले० वेदव्रत शास्त्री सिद्धान्तशिरोमणि]

इस पुस्तक में तीन दर्जन से अधिक प्रमुख आसनों का परिचय, उनके करने की विधि एवं लाभ समझाये गये हैं। प्रत्येक आसन का फोटो (चित्र) इस पुस्तक की अपनी विशेषता है। इसको पढ़कर बिना गुरु के आसन सीख सकते हैं।

मूल्य १-००

३—सुखी जीवन

[ले० सत्यव्रत अग्निवेश]

इस पुस्तक में जीवन को सुखी बनाने के लिए आहार, निद्रा, ब्रह्मचर्य, व्यायाम, प्राणायाम, आसन, दण्ड बैठक कुश्ती आदि अनेक साधनों पर प्रकाश डाला गया है।

भाषा विभाग हरयाणा ने बाल साहित्य के अन्तर्गत 'सुखी-जीवन' पुस्तक को पुरस्कृत भी किया है।

मूल्य २-००

प्रकाशक—**हरयाणा साहित्य संस्थान**

गुरुकुल झज्जर, रोहतक। दूरभाष ४४

CC-0.Panini Kanya ... Vidyalaya Collection.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार्य मेधाव्रत कविरत्न की प्राप्य पुस्तकें

१.	दयानन्ददिग्विजयः (द्वौ भागौ)	१०-००
२.	चारुचरितामृतम्	१-००
३.	छन्दःशास्त्रं व्रतिमङ्गलासहितम्	
४.	काव्यालङ्कारसूत्राणि	
५.	विरजानन्दचरितम्	
६.	नारायणस्वामिचरितम्	
७.	गुरुकुलशतकम्	
८.	ब्रह्मचर्यशतकम्	
९.	ब्रह्मचर्यमहत्त्वम्	
१०.	प्रकृतिसौन्दर्यम्	१-००
११.	कुमुदिनीचन्द्रः	४-००
१२.	दयानन्दलहरी	१-२५
१३.	दिव्यानन्दलहरी	-७५
१४.	सुखानन्दलहरी	-५०
१५.	गिरिराजगौरवम्	-२०
१६.	ईशोपनिषत्काव्यम्	-४०
१७.	साहित्यसुधा १ भागः	१-५०

प्राप्तिस्थानम्—

हरयाणा-साहित्य-संस्थान, गुरुकुल झज्जर, रोहतक ।

CC-0.Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.